बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

अक्षय्यम्

पर्यावरण है तो जीवन है

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका
अप्रैल–जून 2021 अंक

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना की अध्यक्षता में दिनांक 25 मई, 2021 को बैंक की केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री देबदत्त चाँद, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण तथा अन्य उच्च कार्यपालकगण उपस्थित रहे. इस बैठक में बैंक में तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की संक्षिप्त प्रस्तुति और भविष्य में बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा पर विस्तृत चर्चा की गई. मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) एवं प्रभारी – राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री वेणुगोपाल मेनन ने राजभाषा के संबंध में बैंक द्वारा किए जाने वाले उल्लेखनीय कार्यों से समिति को अवगत कराया.

एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै और सौराष्ट्र कॉलेज द्वारा दिनांक 09 अप्रैल, 2021 को 'हिन्दी में रोजगार के अवसर' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय उच्च न्यायालय के न्यायिक अधिकारी श्री यशवीर सिंह उपस्थित थे. उन्होंने अपने वक्तव्य में हिन्दी में रोजगार की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए न्यायिक अनुवाद की उपयोगिता, आवश्यकता आदि पर श्रोताओं को जानकारी प्रदान की.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 66 * अप्रैल–जून 2021

–: कार्यकारी संपादक :–
संजय सिंह
प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–
पुनीत कुमार मिश्र
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–
अम्ब्रेश रंजन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

अमित बर्मन
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–
राजभाषा विभाग
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड
अलकापुरी, बड़ौदा – 390007
फोन : 0265–2316581
ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड,
अलकापुरी, बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण
मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071.

प्रकाशन तिथि : 31/07/2021

इस अंक में

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश..... 04

कार्यपालक निदेशकों की डेस्क से..... 05–06

कार्यकारी संपादक का संदेश 07

12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास.. 08–11

पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी: राकेश खत्री..... 12–15

एमएसएमई क्षेत्र : राष्ट्र की उन्नति का इंजन..... 16–18

भविष्य के शहरों की जरूरतें एवं चुनौतियां..... 19–21

बिना इंटरनेट जीवन..... 22–24

कर्जदार..... 25

आइये सीखें भारतीय भाषाएँ 26–27

कोविड–19 के बाद बैंकिंग में डिजिटल नवाचार 28–29

बदलती जीवनशैली में रिश्तों की अहमियत..... 35–36

अपने ज्ञान को परखिए 44

निरंतर सीखते रहें 45–46

बैंकिंग शब्द मंजूषा 47

हमारे जीवन में पुस्तकों का महत्त्व 48–49

चित्र बोलता है 50

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है. इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

‘आज हम अधिकतर ग्राहकों को अपने डिजिटल माध्यमों से जोड़ने में सफल हो रहे हैं. पिछले कुछ दिनों में समान प्लेटफॉर्म पर अधिक से अधिक ग्राहकों को जोड़ना हमारी उपलब्धि रही है. हमारा यह लक्ष्य होना चाहिए कि हम डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण और अविलंब सेवाएं प्रदान कर सकें.’

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

‘अक्षय्यम्’ के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हमेशा से सुखद रहा है. हाल ही में हम सभी ने एक बार फिर कोरोना महामारी के कठिन समय का सामना किया है. मौजूदा दौर में इसका प्रकोप कम होता तो दिख रहा है परंतु संकट की संभावनाएं पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई हैं. इसलिए हमें लगातार सतर्क और सावधान रहने की आवश्यकता है. हमारे बैंक ने कठिनतम परिस्थितियों में भी ग्राहकों को अपनी सेवाएं निर्बाध जारी रखी हैं. पिछले कई महीनों से बैंक की व्यवसाय निरंतरता योजना (Business Continuity Plan) का लगातार परीक्षण हो रहा है. मुझे प्रसन्नता है कि आप सभी के सहयोग से हम अपनी सेवाएं जारी रखते हुए इसमें सफल हुए हैं.

समय की मांग के अनुसार बैंक ने बहुत तेज़ी से अपनी सेवाओं और प्रोडक्ट्स में तकनीक का समावेश कर इन्हें डिजिटल रूप से सक्षम बनाया है. यह जरूरी है कि तेजी से बदल रहे दौर में हम नवीनतम बदलावों से स्वयं को अद्यतन रखें और सभी विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने के उपाय तलाशते रहें. जहां तक वर्तमान दौर में तकनीक के उपयोग की बात है तो मेरा मानना है कि तकनीक के नवीनतम माध्यम हमारे पास पहले से ही उपलब्ध थे. कोरोना महामारी के संकट के दौर में इन माध्यमों के उपयोग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई और हमने इस दौर में कई किफायती एवं नवोन्मेषी तरीकों का उपयोग करना शुरू किया.

बैंकिंग उद्योग में व्यवसाय विकास में ग्राहकों की भूमिका सर्वोपरि है. बैंकिंग व्यवसाय की व्यापकता ग्राहक के स्वरूप और आधार पर निर्भर करती है. आज हम अधिकतर ग्राहकों को अपने डिजिटल माध्यमों से जोड़ने में सफल हो रहे हैं. पिछले कुछ दिनों में समान प्लेटफॉर्म पर अधिक से अधिक ग्राहकों को जोड़ना हमारी उपलब्धि रही है. हमारा यह लक्ष्य होना चाहिए कि हम डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण और अविलंब सेवाएं प्रदान कर सकें. बैंक की ‘बॉब-नाऊ’ परियोजना के तहत बैंक के डिजिटल रूपांतरण के महत् लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए अनेक पहलें की जा रही हैं और इनसे सभी का जुड़ाव निरंतर बढ़ रहा है. इन पहलों से हम अपने बैंक को भविष्य के लिए तैयार करने में सफल होंगे.

डिजिटल इंडिया के मिशन ने ग्रामीण भारत में अपनी पहुंच को और मजबूत करने की राह आसान की है. ग्रामीण भारत की उन्नति के लिए भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएं बैंकों और ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था दोनों के लिए लाभकारी हैं. इससे न केवल हम अपना व्यवसाय बढ़ा सकते हैं बल्कि देश के उत्थान में अहम भूमिका निभा सकते हैं. आज ग्रामीण इलाकों की संरचनाओं में लगातार बदलाव हो रहे हैं. ग्रामीण क्षेत्र सरकार की कई योजनाओं से लाभान्वित हो रहे हैं. बैंक भी आगे बढ़कर इस कार्य में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं. यह जरूरी है कि हम भी ग्रामीण क्षेत्र के ग्राहकों, छोटी परियोजनाओं, इकाइयों आदि की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए आगे बढ़कर योगदान करें.

ग्रामीण भारत में व्यवसाय के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में भी हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं लगातार अहम भूमिका निभाती रही हैं. हमें क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से अपने नवीनतम प्रोडक्ट्स और सेवाओं का लगातार प्रचार-प्रसार करना जारी रखना चाहिए और इनके जरिए अपना ग्राहक आधार बढ़ाना चाहिए. मुझे विश्वास है कि आप सभी पूर्ववत् व्यवसाय विकास में अपना योगदान देकर बैंक को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे.

शुभकामनाओं सहित,

संजीव चड्ढा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

प्रत्येक प्रतिष्ठित संस्था का गौरवशाली इतिहास होता है और उसके कर्मचारी उस गौरवशाली इतिहास को बनाए रखने एवं असीम ऊचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. पत्र-पत्रिकाएं संस्थान की छवि को प्रचारित करने एवं संवाद के प्रमुख माध्यमों में से एक हैं. ये प्रेरणादायी संदेश देने के साथ-साथ कई नवीन जानकारियों का स्रोत भी होती हैं. वर्तमान परिस्थिति की तमाम बाधाओं के बावजूद भी हमारे बैंक की हिंदी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से नियमित रूप से आपसे संवाद स्थापित करना मेरे लिए अत्यंत सुखद अनुभूति रही है.

आज के अत्यंत प्रतिस्पर्धी आर्थिक जगत में, प्रत्येक बैंक को अपने ग्राहकों की आवश्यकताओं को और अधिक कुशलता से समझने की आवश्यकता है. ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुकूल अपनी कार्य प्रक्रिया को ढालना एवं तकनीक का इस्तेमाल करते हुए न्यूनतम मैनुअल हस्तक्षेप के साथ उन्हें सभी सुविधाएं उपलब्ध कराना आज के समय की मांग है. इसे ध्यान में रखते हुए हमारा बैंक संपूर्ण डिजिटल रूपांतरण की प्रक्रिया में है. मोबाइल बैंकिंग, टैब बैंकिंग, डिजिटल लेंडिंग आदि तकनीकी माध्यमों से ग्राहकों को जमा एवं ऋण संबंधी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं. हाल फिलहाल में अनेक डिजिटल अभियानों के माध्यम से बैंक ने इन डिजिटल उत्पादों से बड़ी संख्या में ग्राहकों को जोड़ा है. हमारा लक्ष्य अपने सभी ग्राहकों को इन माध्यमों से जोड़ने एवं इनका अधिक से अधिक उपयोग करने हेतु प्रेरित करना है. इससे हमारी परिचालन लागत में लगातार कमी आएगी और बैंक अपने संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल कर पाएगा.

कोरोना संक्रमण का दौर सभी के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण रहा है, फिर भी हमने अपनी कार्यशैली में समयानुकूल परिवर्तन करते हुए ग्राहक सेवा को बाधित नहीं होने दिया है. बैंकिंग सेवाओं के साथ-साथ लेखा परीक्षा एवं निरीक्षण जैसी अन्य गतिविधियां तथा विभिन्न कार्यक्रम/ बैंक की कल्याणकारी योजनाएं पूर्व की भांति निर्बाध रूप से जारी रही हैं. बैंकिंग जैसे सेवा क्षेत्र में शीर्ष पर बने रहने के लिए लगातार ग्राहक आधार को बढ़ाना और उन्हें आसान एवं सुविधाजनक बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है. अत: हम अपने ग्राहकों की आशाओं के अनुरूप अपने विभिन्न डिजिटल उत्पादों और सेवाओं में नवोन्मेषिता के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश भी कर रहे हैं ताकि उन्हें भाषायी सुगमता बनी रहे.

मुझे विश्वास है कि आगे भी हम सभी उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करते हुए चुनौतियों पर विजय प्राप्त कर प्रगति की इस अहर्निश यात्रा को जारी रखेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

शांति लाल जैन

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे जुड़ना मेरे लिए विशेष अवसर होता है. एक बहुत ही कठिन दौर से गुज़रते हुए हम सभी सतर्कता भरे माहौल में जी रहे हैं. फिलहाल भविष्य की चिंताएं अभी भी कायम हैं परंतु इन चुनौतियों के बीच भी हमने अपनी यात्रा को जारी रखने के लिए कई उपयोगी रास्तों को तलाशा है जो एक सकारात्मक भविष्य का संकेत दे रहे हैं. कोरोना की त्रासदी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पर्यावरण और मनुष्य के बीच तालमेल का होना अत्यावश्यक है. इन दोनों के बीच तालमेल के बिगड़ने से दोनों के लिए ही अहितकारी स्थितियां सामने आती हैं. गुरुनानक देव जी ने कहा था - पवणु गुरू, पाणी पिता, माता धरति महतु. अर्थात् - वायु हमारा गुरु, पानी पिता और धरती हमारी माता है. हमें इन सभी का सम्मान करना चाहिए.

पर्यावरण संरक्षण आज एक वैश्विक मुद्दा बन गया है. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सम्मेलनों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन की दिशा में ठोस कार्य करने और इस दिशा में विभिन्न राष्ट्रों के बीच सहमति बनाने पर गहन विमर्श जारी है. अलग-अलग दौर में पर्यावरण संरक्षण के लिए यथोचित कदम तो उठाए गए हैं परंतु विकास की गति के बीच यह मुद्दा हमारी दैनिक सोच एवं कार्य प्रक्रिया का हिस्सा अभी भी नहीं बन पाया है.

सन 1974 से हर वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को इस उद्देश्य से मनाया जाता है कि पर्यावरण से संबंधित विषयों पर जागरूकता का प्रसार हो. इसी क्रम में 5 जून, 2021 को भी विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया जिसके साथ 'Ecosystem Restoration दशक 2021-30' का प्रारंभ हुआ है. इस अभियान का यह उद्देश्य है कि हमारी पृथ्वी के वन, खेत, पेड़-पौधे, जीव, पहाड़, जल निकाय आदि का उद्धार हो और इसकी प्राकृतिक सुंदरता बनी रहे.

इस दिशा में हरित भवन/परिसर (Go Green) की संकल्पना पर निरंतर बल प्रदान किया जा रहा है. पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए बैंक भी आंतरिक पत्र व्यवहार के लिए 'पेपरलेस ऑफिस' के माध्यम को बढ़ावा दे रहा है. आज निश्चित रूप से जरूरत है कि हम पर्यावरण एवं विकास के बीच एक संतुलन बनाएं और व्यक्तिगत स्तर पर भी संवहनीय विकास को अपनाएं. यह हमारा दायित्व है कि हम पर्यावरण को कोई हानि न पहुंचाएं ताकि आने वाली पीढ़ियां भी अपनी इस पृथ्वी की भव्य सुंदरता का आनंद उठा सकें.

मुझे विश्वास है कि आप सब भी पर्यावरण के प्रति सजग रहते हुए इसके संरक्षण के लिए अपने हिस्से का योगदान करेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

अक्षय्यम् के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हर्ष का विषय रहा है. वर्तमान महामारी लगातार हमारी आर्थिक व्यवस्था और सामाजिक जनजीवन को प्रभावित करती आ रही है. वैश्विक परिस्थितियाँ अभी भी पूरी तरह से अनुकूल नहीं हुई है. ऐसे समय में अपने आपको शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के साथ मानसिक रूप से स्वस्थ रहना भी अति आवश्यक है. शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए जहां आप योग-प्राणायाम और व्यायाम का सहारा ले सकते हैं वहीं मानसिक रूप से प्रसन्न रहने के लिए अपने आप को दैनिक कार्यों के अलावा रचनात्मक कार्यों में शामिल करना जरूरी है. बैंक की हिंदी गृहपत्रिका अक्षय्यम् स्टाफ सदस्यों को एक ऐसा ही प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराती है जहां स्टाफ सदस्य फुर्सत के कुछ पलों को अपने विचारों के माध्यम से उकेरते हैं जिससे न केवल उन्हें आनंद की प्राप्ति होती है बल्कि उनके रचनात्मक कौशल से अन्य स्टाफ सदस्य भी प्रेरित और लाभान्वित होते हैं.

बैंकिंग क्षेत्र में लगातार चुनौतियों के बावजूद हमारा बैंक प्रगति के पथ पर अग्रसर है. समय के अनुकूल हम लगातार अपनी बैंकिंग कार्यशैली में परिवर्तन कर रहे हैं और ग्राहकों को हर स्तर पर सुखद ग्राहक अनुभव उपलब्ध कराने के लिए डिजिटल जर्नी प्रक्रिया को लगातार सरल और सुलभ बनाने का प्रयास कर रहे हैं. कम से कम समय में ग्राहक अपनी दैनिक बैंकिंग आवश्यकताओं के अलावा अन्य बैंकिंग जरूरतों को भी कहीं से भी घर बैठे ही प्राप्त कर लें इसके लिए मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन एम कनेक्ट प्लस में लगातार नई खूबियों को जोड़ा गया है. आज अपनी इन्हीं खूबियों के चलते ग्राहकों के बीच हमारे बैंक के मोबाइल बैंकिंग ऐप ने एक अलग पहचान बनाई है. टैब बैंकिंग ने जहां खाता खोलने की प्रक्रिया को सुगम बना दिया है वहीं एलएलपीएस का अधिकतम उपयोग ऋण प्रोसेस की दिशा में एक अहम कदम साबित हुआ है. उल्लेखनीय है कि इनमें से अधिकांश सुविधाएं ग्राहकों के लिए हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध हैं. इन्हें ग्राहकों के बीच प्रचारित किए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राहक अपनी सुविधा के अनुकूल भाषा का चयन कर सकें.

आज के मुश्किल परंतु संभावनाओं से परिपूर्ण दौर में शाखा स्तर पर बेहतर अनुपालन संस्कृति के साथ निर्बाध परिचालन के लिए स्टाफ-सदस्यों द्वारा अपनी जिम्मेदारियों का कुशल निर्वाह अत्यावश्यक है. ग्राहकों के साथ व्यवहार में अपनी भाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग उनके साथ हमारे सुदीर्घ एवं परस्पर लाभदायक संबंधों की बुनियाद तैयार करेगा. ऐसा देखने में आता है कि अधिकांश शिकायतें इस कारण से होती हैं कि हम बैंक का पक्ष ग्राहक को आसानी से समझ में आने वाली भाषा में बताने में कहीं न कहीं पीछे रह जाते हैं. परिचालन स्तर पर हम इस पक्ष का ध्यान रखेंगे तो न केवल हमारी ग्राहक सेवा में सुधार आएगा अपितु ग्राहकों की शिकायतों में भी काफी कमी आएगी.

राजभाषा विभाग द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में निरंतर नवोन्मेषी कार्य किए जा रहे हैं. मुझे विश्वास है कि इन नवीन कार्यों का प्रतिफल आने वाले समय में एक सुदृढ़ प्रगति के रूप में देखने को मिलेगा.

शुभकामनाओं सहित,

अजय के खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मेरे लिए सुखद अनुभूति का विषय होता है. संवाद की परंपरा अतीत से चली आ रही है. संवाद, एक ओर जहां हमारी आत्मिक अनुभूति को शाब्दिक अनुभूति में मूर्त रूप देता है, वहीं दूसरी ओर यह अपने परिवेश और परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाने में सहायक होता है. संवाद के जरिए ही हम निरंतर बैंक का व्यवसाय विकास करते आए हैं.

बैंक एक तरह से अर्थव्यवस्था के ग्रोथ इंजन के रूप में काम करते हैं. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के व्यापार में बैंकों की बहुत बड़ी भूमिका है. आज दुनिया भर में जो भी विकास के कार्य होते हैं वे बैंकों के जरिए ही होते हैं. इसे ध्यान में रखते हुए दुनिया भर में तमाम प्रतिबंधों के बावजूद हमने अपने परिचालन को कमोबेश सामान्य तरीके से जारी रखने की पूरी कोशिश की. बैंकों के कार्य का प्रभावित होना अर्थव्यवस्था के विकास का प्रभावित होना है. इसलिए हम सभी को हमेशा ही अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए तत्परता और सजगता से बैंकिंग कार्य को अंजाम देना जरूरी है. बेहतर ग्राहक सेवा के जरिए हम समाज और देश की सेवा करते आए हैं और आगे भी हमें इसी राह पर चलना है. यह आवश्यक है कि हम बैंक के व्यवसाय विकास के हर संभव उपाय को तलाशें और संस्थान के हित में उनपर काम करें.

हमारी कार्य संस्कृति ही हमें अपनी एक अलग पहचान देती है, जिससे ग्राहकोन्मुख बैंकिंग व्यवसाय पालित और पोषित होता है. ग्राहकोन्मुख बैंकिंग के संबंध में भारतीय भाषाओं का अत्यधिक महत्व है. भारतीय भाषाएं वे माध्यम हैं जिनके द्वारा हम अपने ग्राहकों को अपनी ओर आकृष्ट करने में समर्थ होते हैं. आज जब सभी बैंकों के पास लगभग एक समान तकनीक, सुविधाएं एवं उत्पाद हैं वहां ग्राहक सेवा की दृष्टि से अपना अलग स्थान बनाना काफी चुनौतीपूर्ण है. इस संबंध में हिंदी एवं भारतीय भाषाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं. आज के समय में भी यह आवश्यक है कि हम अपनी भाषाओं का बैंक के कारोबार की भाषा के रूप में अधिक से अधिक प्रयोग करें एवं उनके माध्यम से ग्राहकों के साथ सुदृढ़ संबंध कायम करते हुए बैंक के व्यवसाय में बढ़ोतरी करें.

कोविड के कारण प्रत्येक क्षेत्र में चुनौतियां नए एवं अप्रत्याशित स्वरूप में विद्यमान है परंतु हमें इन चुनौतियों के बीच से ही अपना रास्ता तलाशना है. बैंक इस कठिन दौर में अपने सभी स्टाफ सदस्यों के साथ मजबूती के साथ खड़ा है और निश्चित तौर पर हम अपने साझा प्रयासों से न केवल अपने ग्राहकों को आलंबन दे पाएंगे अपितु देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेंगे.

मैं 'अक्षय्यम्' के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी को अपनी शुभकामनाएं देते हुए यह भी कामना करता हूं कि आप सदैव बैंक की प्रगति एवं विकास पथ के अग्रदूत बने रहें.

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चांद

इस अंक में विशेष

पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी – राकेश खत्री

12

एमएसएमई क्षेत्र : राष्ट्र की उन्नति का इंजन

16

भविष्य के शहरों की जरूरतें एवं चुनौतियां

19

कोविड–19 के बाद बैंकिंग में डिजिटल नवाचार

28

कार्यकारी संपादक की कलम से

बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है. पत्रिका के कार्यकारी संपादक के रूप में मैं आप सभी से पहली बार मुख़ातिब हो रहा हूं. मेरा प्रयास रहेगा कि 'अक्षय्यम्' की संपादकीय टीम के सहयोग से हर अंक में ज्ञानवर्धक और नवीनतम सामग्री आपके सामने प्रस्तुत की जाए.

आज समाज में बदलाव की प्रक्रिया पहले की तुलना में काफी तेजी से हो रही है. डेटा की सस्ते दरों पर उपलब्धता एवं इंटरनेट की दूर दराज के इलाकों में पहुंच एवं निरंतर डाउनलोड स्पीड में बेहतरी के कारण आज सूचनाओं को समाज के विभिन्न तबकों तक तत्काल पहुंचाना आसान हो गया है. कोविड–19 के दौर से गुजरते हुए हमने पिछले लगभग डेढ़ वर्षों में ऐसे माध्यमों को अपना लिया है जिसकी शायद हमने खुद कल्पना भी नहीं की थी. आज बैंक की सारी बैठकें, पदोन्नति संबंधी साक्षात्कार आदि डिजिटल माध्मय से हो रहे हैं. पेपरलेस ऑफिस की अवधारणा भी निरंतर बल प्राप्त करती जा रही है. पूरे देश में बड़े शैक्षणिक संस्थान, महाविद्यालय, विद्यालय, कोचिंग संस्थान आदि अपनी कक्षाएं डिजिटल माध्यम से चला रहे हैं, परीक्षाएं भी डिजिटल माध्यम से ही संचालित हो रही हैं. एक तरह से हम कह सकते हैं कि जिन बदलावों के लिए लगभग दशक या उससे ज्यादा के समय की दरकार थी, कोरोना की स्थिति या मजबूरी के कारण ये सारे बदलाव एक वर्ष की संक्षिप्त अवधि में ही हो गए हैं. बदलाव की इस तेज प्रक्रिया ने देश के आम जन के जीवन को भी प्रभावित किया है. आम जन के डिजिटल माध्यम से जुड़ाव के लगातार बढ़ते जाने के साथ ही भारतीय भाषाओं में संदर्भ सामग्री या शिक्षण प्रणाली की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है. साथ ही राष्ट्र निर्माण के प्रयासों में आम जन की सहभागिता को बढ़ाने के लिए भारतीय भाषाओं का इन माध्यमों में निरंतर उपयोग बढ़ाने की आवश्यकता है. हमारा बैंक इस दिशा में सजग प्रयास कर रहा है और अपने सभी डिजिटल चैनलों में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कर रहा है, साथ ही अपनी वेबसाइट के माध्यम से हिंदी में बैंक के उत्पादों एवं योजनाओं से संबंधित संदर्भ–सामग्री भी उपलब्ध करा रहा है. विकास एवं प्रगति के इस भाषायी पक्ष को हमेशा हमें ध्यान में रखना होगा तभी समावेशी विकास एवं चहुंमुखी प्रगति सुनिश्चित हो पाएगी.

इस अंक में हम भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के **सचिव डॉ. सुमीत जैरथ, आई.ए.एस. के** 'स्मृति विज्ञान' पर आधारित आलेख – **'12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास'** शामिल कर रहे हैं, इस आलेख में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रचार–प्रसार का अभिप्रेरणा भाव निहित है. अंक में हमने विश्व पर्यावरण दिवस– 5 जून को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध पर्यावरणविद् **राकेश खत्री** के **साक्षात्कार** को प्रकाशित किया है. पर्यावरण एवं गोरैया संरक्षण की दिशा में उनकी संस्था द्वारा किए जाने वाले प्रयास आपको निश्चित रूप से प्रेरणा प्रदान करेंगे. इसके अतिरिक्त इस अंक में 'बिना इंटरनेट जीवन', 'कोविड–19 के बाद डिजिटल बैंकिंग में नवाचार', 'बदलती जीवन शैली में रिश्तों की अहमियत' जैसे पठनीय आलेख शामिल किए गए हैं. 'कर्जदार' कहानी, गतिविधियों की झलकें आपको रूचिकर लगेंगी. फिलहाल मैं इसी यकीन के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूं कि पत्रिका के प्रत्येक अंक में नवीनतम और उपयोगी सामग्री आप तक पहुंचाने का हमारा प्रयास आगे भी जारी रहेगा. शीघ्र ही अगले अंक में आप से पुनः रू–ब–रू होने की प्रतीक्षा रहेगी.

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

विशेष आलेख

12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास

डॉ. सुमीत जैरथ, आई.ए.एस.,
सचिव, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के बारे में सरकार की नीति यह है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी को प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना से बढ़ाया जाए. इस संदर्भ में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन हेतु 12 'प्र' की रूपरेखा बनाई है. गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा की गई इस पहल को सचिव (राजभाषा) डॉ. सुमीत जैरथ, आई.ए.एस ने गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की पत्रिका 'राजभाषा भारती' में प्रकाशित अपने आलेख के माध्यम से विस्तृत रूप में समझाया है. यह आलेख बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में मील का पत्थर साबित होग. इन बिंदुओं का अनुसरण करते हुए हम निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में नए आयाम स्थापित करने में सफल हो सकेंगे. पत्रिका के पाठकों के लिए हम यह आलेख यहां प्रस्तुत कर रहे हैं.

– संपादक

राजभाषा अर्थात राज-काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा. राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है. संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था. **वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/ उपक्रमों/ बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए.** तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है. राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है.

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे. देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमति से 14 सितंबर, 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया.

26 जनवरी, 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी.

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है.

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए. भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए.' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा - हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है. केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है. साथ ही

साथ प्रधानमंत्री जी के **''आत्मनिर्भर भारत'', स्थानीय के लिए मुखर हों (Self-Reliant India-Be vocal for local)** के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत में सी-डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल **''कंठस्थ''** का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो.

राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा विकास की गति को तीव्र करने संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने के संबंध में हमारी प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है. विदेश से भारत में निवेश बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के छह डी-

Democracy (लोकतंत्र)
Demand (मांग)
Demographic Dividend (जनसांख्यिकीय विभाजन)
Deregulation (अविनियमन)
Descent (उत्पत्ति)
Diversity (विविधता)

से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने 12 'प्र' की रणनीति-रूपरेखा (Frame work) की संरचना की है, जो निम्न प्रकार से है :

1. प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है. हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है. प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं .

2. प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है. राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है.

3. प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है. राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है. यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है.

4. प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं. राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों/उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों/बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं. यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं. पुरस्कारों का महत्त्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है. जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता एवं सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया. इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग छह महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 20 गुना से ज्यादा बढ़ गया. इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा एवं प्राइज यानी पुरस्कार का महती योगदान होता है.

5. प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है. पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं. कहते हैं - आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है. कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी. समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया. इससे प्रेरित

होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान - केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया. माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हो (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्वदेशी NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है.

6. प्रयोग (Usage)

यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it). हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है. इसलिए भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय-समय पर करते रहना चाहिए. हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें.

7. प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है. हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व - माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी राजभाषा हिंदी के मेसकोट- ब्रैंड राजदूत (Brand Ambassadors) के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है. हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई. संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था. उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था. उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वत: ही हिंदी का प्रचार होता था. आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है. तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों का बड़ा योगदान है, इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है.

8. प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे. राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है. **राजभाषा विभाग द्वारा अपनी वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे.** राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है. इसके साथ-साथ बॉलीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है.

9. प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है. इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें.

10. प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)

राजभाषा हिंदी में तभी अधिक ऊर्जा का संचार होगा, जब राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियुक्त अधिकारी एवं कर्मचारी; केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के सदस्यगण, सभी उत्साहवर्धक और ऊर्जावान हों और अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएं. समय-समय पर प्रमोशन (पदोन्नति) मिलने पर निश्चित रूप से उनका मनोबल बढ़ेगा और इच्छाशक्ति सुदृढ़ होगी.

11. प्रतिबद्धता (Commitment)

राजभाषा हिंदी को और बल देने के लिए मंत्रालय/विभाग/सरकारी उपक्रम/राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, संयुक्त सचिव (राजभाषा), अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता परम आवश्यक है. माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव अनुसार और राजभाषा विभाग के अनुभव से यह पाया गया है कि जब शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी/उत्तरोत्तर ही नहीं, अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हैं तब उनके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplary Leadership) से पूरे मंत्रालय/विभाग/ उपक्रम/बैंक को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता है. जब वे हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाते हैं और बीच-बीच में हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (Monitoring) करते हैं तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होती है **जैसे कि गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय में देखा गया है.** अभी हाल में ही राजभाषा विभाग ने सबको पत्र लिखकर आग्रह किया है :

(क) हर माह में एक बार सचिव/अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम-काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें.

(ख) अपने मंत्रालय/विभाग/संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें.

12. प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है. इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए. **यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि :**

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जयजयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है. विभाग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) का भी आश्रय ले रहा है. विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए ये दोनों **आवश्यक परिस्थितियां (Necessary Conditions) हैं. इस दिशा में और गति देने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियां (Sufficient Conditions) हैं.**

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें. हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि प्रशासन में पारदर्शिता आए और आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सकें. मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन **बारह 'प्र'** को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत; सुदृढ़ आत्मनिर्भर भारत'** के सपने को साकार करने में सफल होंगे.

साक्षात्कार

पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी - राकेश खत्री

पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और उसके संरक्षण को प्रोत्साहित करने लिए प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है. इस अवसर पर हमने प्रसिद्ध पर्यावरणविद् श्री राकेश खत्री जी से बातचीत की. श्री राकेश खत्री उन जानी-मानी हस्तियों में से एक हैं, जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण और गौरैया संरक्षण में एक खास मुकाम हासिल किया है. आपने पर्यावरण संरक्षण के कार्यों के प्रचार-प्रसार के लिए ईको रूट्स फाउंडेशन की स्थापना की और देश भर से हजारों लोगों को इस कार्य से जोड़ा है. साथ ही आप ट्री कैनोपी बनाने, आवासीय इलाकों में रिसाइकल्ड ई-वेस्ट बिन की व्यवस्था करने, स्कूल परिसरों में हर्बल नर्सरी की व्यवस्था करने जैसे प्रयास भी कर रहे हैं. गौरैया संरक्षण के प्रति आपके प्रयासों के लिए वर्ष 2013 में आपको लंदन के हाउस ऑफ़ कॉमन्स में इन्टरनेशनल ग्रीन ऐपल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया. साथ ही आपको कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है. प्रस्तुत हैं बातचीत के कुछ अंश :

- संपादक

कृपया पत्रिका के पाठकों को अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बताएं.

मेरा बचपन शुरूआती दिनों में आगरा और फिर पुरानी दिल्ली की गलियों में बीता. यहां भीड़-भाड़ से भरी सड़कें थीं और साफ-सफाई का कोई विशेष इंतजाम नहीं होता था लेकिन दिल तब भी बड़े थे. हम लोग केवल दो चीजों के लिये इंतज़ार किया करते थे - 26 जनवरी की परेड और रामलीला. रामलीला के दिनों में निकलने वाली दोपहर और शाम की झांकियों के साथ सबसे बड़ा खेल होता था छत पर टोकरी लगा कर उसके नीचे दाना डाल कर एक डंडी से उसे टिकाना और जैसे ही गौरैया आती थी हम रस्सी खींच देते थे और टोकरी में गौरैया बंद हो जाती थी. फिर पकड़ कर उसे कलर या लाल रंग की लिपिस्टिक से पोत कर छोड़ देते थे. शाम को इन्हीं बातों को लेकर डांट भी पड़ती थी. पता नहीं था कि इसी चिड़िया के कारण मुझे और मेरे घोंसले बनाने की लगन को एक दिन बच्चों की किताब में पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया जाएगा और वर्ष 2013 में मुझे लंदन के हाउस ऑफ़ कॉमन्स में इंटरनेशनल ग्रीन ऐपल अवॉर्ड से भी नवाजा जाएगा.

कब बचपन उन गलियों से निकला और अशोक विहार के हरे भरे इलाके में पहुंच गया? पता ही नहीं चला. अशोक विहार में मकानों के पीछे 10 एकड़ में फैले अमरुद और

शहतूत के बाग़ में सारा दिन खेलना, कच्चे अमरुद खाना और हैंड पंप के पानी से प्यास बुझाना. कुछ ऐसी ही दिनचर्या होती थी. मौसम और पर्यावरण बहुत ही अच्छा था. देखते देखते 90 के दशक से ही सब डावांडोल होने लगा. ऋतुएं आगे बढ़ने लगी, मेढ़क आवाज निकालना भूलने लगे, जुगनू चमकना भूलने लगे, पतझड़ को आने की जल्दी और सावन को जाने की जल्दी हो गई, गर्मी बढ़ती गयी और सर्दी घटती गयी लेकिन गौरैया मेरे दिल से कभी नहीं निकली. यहाँ भी मैं उसका घोसला ढूंढ़ने में उस्ताद था. मुझे गौरैया से बहुत लगाव रहा. अब तो लोग एक दूसरे से बात करना भूलते जा रहे हैं क्योंकि खुद ही उन्होंने अपने आप को मुट्ठी में पकडे. मोबाइल में कैद करना शुरू कर दिया है.

आपने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा कहां से प्राप्त की ?

मैं मानता हूं कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काम करने की इच्छा सबके मन में होती है. जब आप महसूस करने लगते हैं कि इसको बचाने की जरूरत है और मुझे कुछ करना चाहिये तो यहां 'हम' नहीं 'मैं' का जागना जरूरी है. सामूहिक रूप से कार्य करने पर ही हम पर्यावरण संरक्षण के लिए बड़ा योगदान दे सकते हैं. इस कार्य के लिए इसकी भावना ने मुझे जगाया और आज मैं आपके बैंक ऑफ़ बड़ौदा तक पहुँच गया.

कृपया वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए जा रहे अपने कार्यों पर प्रकाश डालें.

मैं समझता हूं कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपने छोटे-छोटे प्रयासों से हम बड़ी उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं. मैं अपनी संस्था के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़कर उन्हें इस नेक कार्य के लिए प्रोत्साहित करने की कोशिश करता हूं. इस दिशा में काफी हद तक सफल भी हुआ हूं. मैंने छोटे-छोटे प्रयास किए जैसे कि सोसायटी में ट्री कैनोपी बनाना, आवासीय इलाकों में रिसाइकल्ड ई-वेस्ट बिन की व्यवस्था करना, स्कूल परिसरों में हर्बल नर्सरी की व्यवस्था करना. इसके अलावा हमारी संस्था बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के उपाय बताने और उन्हें इस संबंध में महत्वपूर्ण सीख देने का काम कर रही है. हम उन्हें यह बताते हैं कि थोड़े से प्रयास से हम अपनी इस सुंदर और जीवनदायिनी धरती को खूबसूरत रख सकते हैं.

कृपया अपनी संस्था ईको रूट्स फाउंडेशन के बारे में हमें बताएं.

इको रूट्स फाउंडेशन एक स्वयंसेवी संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के कार्यों के प्रचार-प्रसार से जुड़ा है. पूरे देश में हमने हजारों सक्रिय लोगों को जोड़ा है. राजधानी के अलावा हम शहरों में छोटे कार्यालयों और फील्ड वर्कर्स के साथ कार्य करते हैं. यह संस्था पर्यावरण संरक्षण संबंधी मामलों को लेकर अधिक से अधिक लोगों में जागरूकता फैलाने का माध्यम है. इस प्रकार से यह संस्था अपनी पहलों के जरिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने का काम कर रही है. हमारी संस्था बच्चों और युवाओं को पर्यावरण की बेहतर देखभाल करने हेतु प्रोत्साहित करती है. इस तरह से पर्यावरण संबंधी शिक्षा का प्रसार हमारी संस्था के विभिन्न लक्ष्यों में से एक बन गया है. हमारा उद्देश्य इकोसिस्टम की सुंदरता और इसका संरक्षण करने के साथ-साथ इको-टूरिज्म को बढ़ावा देना है.

पत्रिका के पाठकों को आप गौरैया संरक्षण के अपने मिशन के बारे में बताएं.

गौरैया का जिक्र तकरीबन सभी ग्रंथों जैसे कि बाइबल, कुरान, रामायण आदि में मिलता है. बचपन से हम घरों में 'चिड़िया उड़' खेलते रहे हैं. हमारे पुराने घरों में यह आराम से पला-बढ़ा करती थी. अब इनका घर हमने छीन लिया या यूँ कहूं कि हमने अपना दिल बंद कर लिया है.पहले के घरों या भवनों का निर्माण इस तरह होता था कि गौरैया हमारे घरों में ही घोसला बना कर रह लेती थी. आज गौरैया को अपना

आशियाना नहीं मिल पा रहा है. गौरैया धीरे-धीरे हमारी जिंदगी से दूर हो रही है. पैकेट फूड का चलन बढ़ रहा है. जो सरसों का साग और कढ़ी घर में बनते थे अब पैकेट में आ गये हैं. लोग घरों में अनाज धोकर नहीं सुखाते हैं. घरों में पापड़ बनाने की परंपरा कम हो गई है. पार्कों में सीमेंटेड ट्रैक बनने लगे हैं, छोटे झुरमुट समाप्त होते जा रहे हैं. बहुमंजिला इमारतें बनने से गौरैया के रहने की जगह पूरी तरह समाप्त हो रही है. इस तरह गौरैया धीरे-धीरे गायब होने लगी हैं. तकरीबन सभी घरों में खिड़की दरवाजे बंद रहने लगे हैं. वो पंखों की कटोरी और स्विच बोर्ड सभी मॉड्यूलर हो गये जो कभी गौरैया के घोंसले बनाने के स्थान रहे थे. सबसे बड़ी बात कि घर का आँगन ही गायब होकर घर के कमरों में मिल गया. हम इंसानों ने सोचा ही नहीं कि जिस चिड़िया की आवाज से आँखें खुलती थीं और जो बच्चों के आकर्षण का केन्द्र रही थीं वही आज विलुप्त हो रही हैं. अब वह सब कहाँ हैं? आज सबके हाथ में मोबाइल ही मनोरंजन का साधन बन गया है.

गौरैया इको सिस्टम का बेस्ट बैरोमीटर है जो स्वच्छ वातावरण में रहती है. वह हार्मफुल इंसेक्ट्स को खा जाया करती है. कहीं-कहीं कुछ प्रयासों से अब फिर गौरैया वापस लौट रही है. इससे प्रेरणा लेकर मैंने सोचा क्यों न पर्यावरण और गौरैया संरक्षण के लिए काम किया जाए. इन सबकी पृष्ठभूमि फ्लैशबैक के रूप में मेरे मस्तिष्क में तो थी ही. मुझे घोंसला बनाने का विचार आया क्योंकि यह मेरे कौतूहल का विषय रहा. हरा नारियल दिल्ली में खूब आने लगा था, उसी को लेकर एक सार्थक प्रयोग किया. उसके अन्दर अखबार की कतरन डाली, सूखने के लिये चारो तरफ फेविकॉल लगाया और हर ओर कूलर में लगने वाली घास लपेट दी. चिड़िया के लिये एक डंडी लगाई और हो गया घोंसला तैयार. इसे एक पेड़ पर अच्छे से लगा दिया ताकि हिले नहीं. तीन दिन बाद चिड़िया को बैठे हुए देखा. इस तरह चिड़िया वापस आयी. जब चिड़िया ने घास उठा कर अन्दर डालनी शुरू कर दी तब मेरी ख़ुशी दोगुनी हो गयी.

एक समस्या थी कि हरा नारियल जल्दी सूख जाता था ऐसे में तीलियों से घोंसला बनाने का उपाय सूझा जो एक घोंसले से शुरू हुआ सफर अब 34 हजार से ज्यादा घोंसलों पर पहुँच चुका है और लकड़ी वाले भी 40 हजार से ज्यादा की तादाद में बन चुके हैं. स्कूल-कॉलेज, कॉर्पोरेट रेसिडेंस वेलफेयर एसोसिएशन इस पहल से जुड़ते चले गये और दूरदर्शन पर 'एक चिड़िया, अनेक चिड़िया' का गाना गूंजने लगा.

गौरैया संरक्षण और पर्यावरण के लिए काम करने हेतु आप कैसे प्रेरणा पा रहे हैं?

मुझे बहुत ही अच्छा लगता है जब कई बार तीन पीढ़ियां इकठ्ठी बैठ कर घोंसला बनाती हैं. मुश्किल यही है कि जब हम उस लकड़हारे की तरह व्यवहार करते हैं कि जो उसी डाल पर बैठ कर उसी को काट रहा था तब हमें यह सोचना चाहिए कि हम अपने भविष्य के लिए क्या कर रहे हैं. अभिभावक अगर जरा भी संकल्प लें और अपने बच्चों को पर्यावरण सरंक्षण की तरफ थोड़ा प्रेरित करें तो शायद पुरखों से जो हमें फलती-फूलती विरासत मिली है उसे संजोने में आज की पीढ़ी बेहतर योगदान कर सकेगी. मुझे बड़ा दुःख होता है जब अपनी वर्कशॉप में मैं बच्चों से पूछता हूं कि अपने घर के आस-पास कबूतर और कौए को छोड़कर पांच पक्षियों के नाम बताओ, तो वे दो से अधिक बता ही नहीं पाते हैं.

पर्यावरण के लिए कार्य करने में मुझे जो शक्ति मिलती है वह

उन बच्चों से मिलती है जो मुझे किसी वर्कशॉप में मिलते हैं और काफी समय बाद किसी कॉलेज या सेमिनार में मिलते हैं और संस्था के साथ काम करने के लिये जुड़ जाते हैं. वे मेरे लिए एक शक्ति का स्रोत हैं. मेरी पत्नी और मेरे दो बच्चे अनिमेष और रानिका ने मुझे आगे बढ़ने में हमेशा सहयोग किया है. मैं अपने आस-पास आज की स्थिति को देखता हूँ तो लगता है कुछ प्रयासों से चिड़िया अब पंख फैला कर वापस आ रही हैं. तिनकों से सफर, आज हजारों सहयोगियों के साथ जुड़ गया है. विशेष बात यह है कि आज **आईसीएससी की कक्षा चार की** मैकमिलन पब्लिशिंग की **अंग्रेजी की पुस्तक में एक अध्याय में हमारे कार्य को भी शामिल किया गया है.**

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कॉर्पोरेट्स और अन्य संस्थान किस तरह सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं?

कुछ कॉर्पोरेट तो इसमें वाकई शानदार काम कर रहे हैं. मैं समझता हूं कि इस संबंध में किसी एक का नाम लेना अनुचित होगा. देश की कई संस्थाएं सीएसआर के अंतर्गत पर्यावरण सरंक्षण में योगदान दे सकती हैं.

जल संरक्षण और ई-वेस्ट प्रबंधन के कुछ उपयोगी उपायों के बारे में अपने अनुभव हमसे साझा करें.

आज जल संरक्षण पर गहन चिंतन की जरूरत है. इस संबंध में मैंने अभी एक कार्यक्रम पूरा किया है जिसमें पूरे देश में 94 हजार स्कूली विद्यार्थियों ने भाग लिया. यह कार्यक्रम एक जागरूकता नाटक के तौर पर बहुत बढ़िया रहा. इस संबंध में प्राप्त विचारों को हम अब एक छोटी किताब के रूप में संकलित कर रहे हैं.

ई-वेस्ट प्रबंधन के लिए हम पिछले पांच वर्षों से रिसाइकर्ल्स (RECYCLERS) के साथ स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम कर रहे हैं. मौजूदा समय में वही काम ऑनलाइन माध्यम में हो रहा है. हम अपने कार्यक्रम के द्वारा स्कूली छात्रों को प्रोत्साहित करते हैं. 'इको रूट्स' और 'अवनि संस्था' के इस साझा प्रयास ने अब रंग लाना शुरू कर दिया है. हम टेट्रापैक का ई-वेस्ट बिन सोसाइटीज स्कूल और संस्थानों में लगा रहे हैं.

तकनीकी प्रतिस्पर्धा और जलवायु परिवर्तन के बीच किस प्रकार तालमेल बिठाया जा सकता है?

मैं समझता हूं कि तकनीक का इस्तेमाल सोच-समझ कर और संतुलित रूप में किया जाना चाहिए. इसका असंतुलित उपयोग भी घातक है. हमें इसे एक साधक के रूप में उपयोग में लाना चाहिए न कि बाधक के रूप में. प्रकृति हमें कई बार खतरे की चेतावनी देती है परंतु शायद ही हम उसका पता सही रूप में लगा पाते हैं. विकास और विनाश के बीच एक बहुत ही पतली लाइन का अंतर है. एक इंच भी इधर या उधार हुआ तो सब बिगड़ने में समय नहीं लगता है. तकनीक जरूर अपनाएं पर ऐसा न हो कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकृति के फॉग को स्मॉग में बदल दें. मुझे यह भी लगता है कि जलवायु परिवर्तन को लेकर आज के बच्चे जागरूक हो गये हैं. जरूरत है कि हम उन्हें सही मार्गदर्शन दें.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा का नाम सुन कर आपके मन में किस प्रकार के विचार आते हैं?

मेरे पिता भी एक बैंकर थे. वे द नेशनल एंड ग्रिंडलेज़ बैंक लिमिटेड (THE NATIONAL AND GRINDLAYS BANK LTD - जो अब स्टैंडर्ड चार्टेड में मिल गया है) में कार्यरत थे. मैं उनके साथ 1974 में चांदनी चौक जाया करता था. वहीं बैंक ऑफ़ बड़ौदा की एक शाखा थी. मैं हमेशा यह सोचता था कि यह बड़ौदा के महाराजा का बैंक है. बड़ा होने पर इंटरनेट पर खोजा तो अपने ऊपर गर्व किया कि मैं सही सोचता था. बैंक ऑफ़ बड़ौदा की व्यापकता और सेवाओं की तो सभी तारीफ़ करते हैं. मैं भी बैंक ऑफ़ बड़ौदा का एक खाताधारक हूँ और आशा करता हूँ कि इसकी उड़ान और विस्तार में लगातार वृद्धि होगी.

एमएसएमई क्षेत्र : राष्ट्र की उन्नति का इंजन

भारत की अर्थव्यवस्था को विश्वभर में विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता है. भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था में से एक है और 2.87 ट्रिलियन जीडीपी के साथ दुनिया की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है. आईएमएफ के अनुसार वर्ष 2019-20 में मौजूदा कीमतों पर भारत की प्रति व्यक्ति आय तकरीबन 2100 है. भारत वर्ष 2019 में विश्व भर में प्रति व्यक्ति आय के मामले में 142 वें स्थान पर था. 1991 में भुगतान संकट के तीव्र असंतुलन के बाद भारत ने आर्थिक उदारीकरण के व्यापक कार्यक्रम को अपनाया. 21वीं सदी की शुरुआत के बाद से भारत की वार्षिक औसत जीडीपी ग्रोथ 6% से 7% रही है तथा 2014 से 2019 तक भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था रही.

एमएसएमई का पूरा नाम सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग है. एमएसएमई उद्योग स्थानीय स्तर पर किया जाने वाला उद्योग होता है. इस तरह का उद्योग कम लोगों के माध्यम से कम जगह पर भी आसानी से संचालित किया जा सकता है. एमएसएमई उद्योग मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं.

विनिर्माण उद्योग (मैनुफैक्चरिंग सेक्टर):- विनिर्माण उद्योग में नई चीजों को बनाने यानी निर्माण करने का कार्य किया जाता है.

सेवा क्षेत्र (सर्विस सेक्टर):- सेवा क्षेत्र में मुख्य रुप से सेवा प्रदान करने का कार्य किया जाता है. इस सेक्टर में लोगों को और विभिन्न संस्थाओं को सेवा देने का काम होता है.

जून 2020 में सरकार द्वारा राहत घोषणा पैकेज आत्मनिर्भर भारत की शुरुआत करते हुए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की नई परिभाषा की घोषणा की गई. एमएसएमई की नई परिभाषा निम्नानुसार है:

उद्योग	परिभाषा	उद्योग श्रेणी
सूक्ष्म उद्योग	रु.1 करोड़ तक के निवेश और रु. 5 करोड़ तक के टर्नओवर वाले उद्योग को सूक्ष्म उद्योग यानी माइक्रो इंटरप्राइज का दर्जा दिया गया है.	विनिर्माण और सेवा दोनों क्षेत्र
लघु उद्योग	रु.10 करोड़ तक के निवेश और रु. 50 करोड़ तक के टर्नओवर वाले इंटरप्राइज को स्मॉल यूनिट (लघु उद्योग) माना गया है.	विनिर्माण और सेवा दोनों क्षेत्र
मध्यम उद्योग	रु. 50 करोड़ तक के निवेश और रु. 250 करोड़ तक के टर्नओवर वालों को मीडियम इंटरप्राइज (मध्यम उद्योग) माना गया है.	विनिर्माण और सेवा दोनों क्षेत्र

भारत में एमएसएमई क्षेत्र राष्ट्रीय आर्थिक संरचना की रीढ़ है तथा इस क्षेत्र ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई ऊचाइयों पर पहुँचाने में बहुत काम किया है. यह क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था को वैश्विक आर्थिक झटके और प्रतिकूलताओं को दूर करने के लिए शक्ति प्रदान करता है. देश के भौगोलिक विस्तार में लगभग 63.4 मिलियन यूनिट के साथ एमएसएमई - विनिर्माण क्षेत्र, जीडीपी का लगभग 6.11% और सेवा क्षेत्र जीडीपी का 24.63% योगदान करते हैं. यह क्षेत्र लगभग 120 मिलियन व्यक्तियों को रोजगार देने में सक्षम हैं तथा भारत से कुल निर्यात का लगभग 45% योगदान करते हैं. पिछले कई वर्षों से इस क्षेत्र ने लगातार 10% से अधिक की विकास दर बनाए रखी है. यह क्षेत्र लगभग 20% ग्रामीण इलाकों में कार्य करता है, जो इस क्षेत्र में ग्रामीण कार्यबल के योगदान को दर्शाता है. एमएसएमई के सतत और समावेशी विकास से बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा होता है जो शहरी क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है.

एमएसएमई क्षेत्र की विशेषता

बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न करना:

इस क्षेत्र में आने वाले उद्योगों को व्यवसाय शुरू करने के लिए कम पूंजी की आवश्यकता होती है, इसलिए यह कई बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करता है. भारत प्रति वर्ष 12 लाख ग्रेजुएट तथा 8 लाख इंजीनियर पैदा करता है. दुनिया में दूसरी कोई व्यवस्था नहीं है जो एक वर्ष में इतने सारे नए ग्रेजुएट्स को रोजगार प्रदान कर सके. एमएसएमई इन युवाओं के लिए वरदान है.

आर्थिक विकास और निर्यात में स्थिरता प्रदान करता है :

एमएसएमई भारत में एक महत्वपूर्ण विकास चालक है. यह जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान देता है. भारत में निर्यात क्षेत्र को अकेले एमएसएमई से लगभग 40% योगदान मिलता है.

समावेशी विकास को प्रोत्साहित करता है :

भारत में लगभग सभी बड़े उद्योगों का स्वामित्व केवल 100 लोगों के पास है जो धन के असमान वितरण का कारण हैं. समावेशी विकास के लिए उद्योगों का स्वामित्व आम जनता के पास होना अत्यंत आवश्यक है. एमएसएमई क्षेत्र जनता की इस आवश्यकता को पूरा करता है. यह क्षेत्र आम इंसान के सपनों को नई ऊंचाइयां देता है.

सस्ता श्रम और न्यूनतम ओवरहेड:

एमएसएमई के मामले में अत्यधिक कुशल मजदूरों की आवश्यकता नहीं है. अत: यह क्षेत्र अकुशल श्रमिकों को भी खपत करने में सक्षम है. इस प्रकार के उद्योगों में मालिक द्वारा किए गए अप्रत्यक्ष खर्च भी कम होते हैं.

व्यवसाय के लिए सरल प्रबंधन संरचना

एमएसएमई को शुरू करने के लिए एक बड़ी पूंजी की आवश्यकता नहीं है. मालिक के नियंत्रण में उपलब्ध सीमित संसाधनों के साथ, निर्णय लेना आसान और कुशल हो जाता है. एक बड़े उद्योग के मामले में जहां जटिल संगठनात्मक संरचना के कारण प्रत्येक विभागीय कार्यकलाप के लिए एक विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है किन्तु एक छोटे उद्यम को अपने प्रबंधन के लिए बाहरी विशेषज्ञ को रखने की आवश्यकता नहीं होती है. मालिक खुद ही इसे प्रबंधित कर सकता है.

मेक इन इंडिया को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका :

मेक इन इंडिया की शुरुआत ने एक नया व्यवसाय शुरू करने की प्रक्रिया को आसान बना दिया है. एमएसएमई इस सपने को एक संभावना बनाने में रीढ़ की हड्डी है.

एमएसएमई क्षेत्र की चुनौतियां :

भारतीय आर्थिक विकास में एमएसएमई के महत्व के बावजूद इस क्षेत्र को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है. इस क्षेत्र को संबंधित सरकारी विभागों, बैंकों, वित्तीय संस्थानों और कॉर्पोरेट से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है जो एमएसएमई के विकास पथ में एक बाधा साबित हो रहा है. इसके साथ ही साथ बदलते विश्वव्यापी परिवेश में जहां अमेरीका- चीन व्यापार युद्ध, चीन से आयात होने वाला सस्ता सामान, विश्वव्यापी आर्थिक महामंदी, बदली हुई कर संग्रहण व्यवस्था (जीएसटी), नोटबंदी, कोविड महामारी, लॉकडाउन इत्यादि है वही एसएमई क्षेत्र में मौजूदा/नई कंपनियों के सामने आने वाली निम्नुसार समस्याएँ भी हैं :-

1. पर्याप्त और समय पर बैंकिंग वित्त की अनुपलब्धता.
2. सीमित पूंजी और तकनीकी ज्ञान.
3. नई और आधुनिक तकनीक की अनुपलब्धता.
4. कम उत्पादन क्षमता.
5. पुरानी एवं अप्रभावी विपणन रणनीति.
6. आधुनीकीकरण और विस्तार में पूंजी एवं सरकारी अनुमति संबंधी बाधाएं.
7. सस्ती कीमत पर कुशल श्रमिकों की गैर उपलब्धता.
8. सरकारी हस्तक्षेप.
9. कर संबंधी जटिलताएं.
10. बाजार में उत्पादन की घटती मांग .
11. चीन से बढ़ती व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा.
12. अमेरिका- चीन का आर्थिक युद्ध.
13. उपभोक्ता वर्ग का निरंतर बदलता हुआ उपभोग पैटर्न.
14. व्यवसाय के हर क्षेत्र में बड़ी कंपनियों द्वारा छोटे उद्योगों को निगलने की प्रवत्ति.

एसएमई क्षेत्र को सीमित संसाधनों का उपयोग करके सशक्त बनाना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि वह बदलते वैश्विक परिवेश में विकास के साथ तालमेल रखते हुये आगे बढ़ सके.

एमएसएमई क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में भूमिका

भारतीय अर्थव्यवस्था में एमएसएमई क्षेत्र का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है. एमएसएमई की प्रमुख आवश्यकताएं प्रारंभिक पूंजी, कार्यशील पूंजी और लाइन ऑफ क्रेडिट की

व्यवस्था करना है, एमएसएमई क्षेत्र अर्थव्यवस्था को लचीलापन प्रदान करती है और उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देती है. एमएसएमई बड़े उद्यमों की तुलना में कम लागत पर अधिक रोजगार प्रदान करती है. यह क्षेत्र निर्यात को बढ़ाता है ताकि देश की अर्थव्यवस्था में भुगतान संतुलन व्यवस्थित हो सके. एमएसएमई क्षेत्र रोजगार को बढ़ाकर गरीबी को कम करता है तथा उन्हें राष्ट्र की मूलधारा से जोड़कर उपभोगी वर्ग से उत्पादक वर्ग में परिवर्तित करता है. एमएसएमई क्षेत्र के विकास के साथ पूंजी का वितरण अर्थव्यवस्था के हर वर्ग में होता है जिससे आर्थिक असमानताएं कम होती हैं.

भारत सरकार ने एमएसएमई क्षेत्र के महत्व को समझा है तथा इसके विकास हेतु विभिन्न कदम उठाए हैं. इस क्रम में नीति आयोग की प्रमुख पहल अटल इनोवेशन मिशन (AIM) की शुरुआत की गई जिसका उद्देश्य सामुदायिक नवाचार, उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ाना है. सरकार 'भारतक्राफ्ट' पोर्टल लॉन्च करने की योजना बना रही है जो ई-कॉमर्स मार्केटिंग प्लेटफॉर्म पर छोटे एमएसएमई के उत्पाद बेचने के लिए है. छोटे एमएसएमई को समय पर तथा बैंकों से पर्याप्त ऋण मिले, इस हेतु सरकार ने विभिन्न योजनाओं तथा सब्सिडी स्कीम की शुरुआत की है, जैसे मुद्रा, स्टैंडअप, स्किल इंडिया इत्यादि. एमएसएमई को संपार्श्विक प्रतिभूति के कारण होने वाले संकट को दूर करने के लिए सीजीटीएमएसई की सीमा रु. 2.00 करोड़ तक बढ़ा दी है. वर्तमान में अर्थव्यवस्था मे गति प्रदान करने के लिए सरकार जिला स्तर पर लोन मेला का आयोजन कर रही है ताकि छोटे उद्यमी अर्थव्यवस्था में अपना सकारात्मक योगदान दे सके.

एमएसएमई पर कोविड-19 का प्रभाव:

एमएसएमई क्षेत्र कोविड महामारी के पहले से ही आय में गिरावट और अन्य कई समस्याओं से जूझ रहा था. परंतु लॉकडाउन के बाद कई उद्यमों के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न उठने लगे. हाल ही में जारी एक सर्वे में लघु और मध्यम श्रेणी के केवल 7% उद्यमों ने माना कि वे वर्तमान में उपलब्ध पूंजी के माध्यम से तीन महीने से अधिक अवधि तक कारोबार बंद होने की स्थिति में भी उद्यम को बचाए रखने में सक्षम होंगे. साथ ही अधिकांश श्रमिकों के पलायन के कारण इन उद्यमों को पुनः शुरू कर पाना एक बढ़ी चुनौती होगी. एमएसएमई को दिया गया अधिकांश ऋण संपत्ति के मूल्य पर आधारित होता है परंतु वर्तमान में कोविड महामारी के कारण संपत्तियों के मूल्यों में भारी गिरावट हुई है, जो नए ऋण जारी होने में एक बाधा बन गया है.

अत: सरकार ने एमएसएमई उद्योगों को बचाने के लिए कई उपाय किए है:

- आरबीआई द्वारा एमएसएमई क्षेत्र में तरलता की कमी को दूर करने के लिए कई प्रयास किये गए हैं, परंतु संरचनात्मक जटिलताओं (प्रत्यक्ष बैंकिंग प्रणाली से न जुड़ा होना, आंकड़ों का अभाव) के कारण इसके सीमित प्रभाव दिखाई दिये हैं.
- सरकार कर में कटौती, रिफंड प्रक्रिया में तेज़ी के साथ विभिन्न योजनाओं (जैसे- पीएम किसान, जन धन योजना आदि) के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में तरलता और एमएसएमई उत्पादों की मांग में वृद्धि कर एमएसएमई को सहायता पहुँचा रही है.
- ऐसे में यदि सरकार की तरफ से एमएसएमई ऋण के लिये एक क्रेडिट गारंटी जारी की जाए तो वह एमएसएमई के लिये काफी मददगार साबित हो सकती है.
- वह उद्योग जो वर्तमान ऋण चुकाने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं, उनके लिए आरबीआई ने रीस्ट्रक्चर स्कीम शुरू की है, यह स्कीम छोटे उद्योगों को निश्चित रूप से मदद करेगी.

सारांश :-

एमएसएमई क्षेत्र पिछले पांच दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था का अत्यधिक जीवंत और गतिशील क्षेत्र बन कर उभरा है. एमएसएमई बड़े उद्योगों की तुलना में तुलनात्मक रूप से कम पूंजी लागत पर बड़े रोजगार के अवसर प्रदान करने में भूमिका निभाते हैं. तथा ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के विकास में भी मदद करते हैं. एमएसएमई क्षेत्र में औद्योगिक विकास को पूरे देश में फैलाने की क्षमता है तथा यह क्षेत्र देश भर में समावेशी विकास की प्रक्रिया में एक प्रमुख भागीदार हो सकता है. एमएसएमई विकसित और विकासशील दोनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं के बीच अत्यधिक अनुकूलनीय हैं, बशर्ते उनको विकसित करने के लिए सरकार सुविधाजनक वातावरण तैयार करे. एमएसएमई गरीब देशों में और साथ ही अधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं में एक महत्वपूर्ण आर्थिक कारक हैं जो देश को छोटे मोटे आर्थिक झटको को सहन करने की ताकत देता है. वर्तमान मे कोविड को देखते हुए एमएसएमई क्षेत्र थोड़ी कठिनाई में जरूर है, किन्तु अगर हम इस कठिन समय में उनकी मदद करते हैं तो वह न केवल खुद इस मुसीबत से निकलेंगे अपितु पूरे देश को इस कठिन समय से निकालेंगे.

डॉ. मुकेश कुमार
शिक्षण प्रमुख एव मुख्य प्रबन्धक
बड़ौदा अकादमी, राजकोट

भविष्य के शहरों की जरूरतें एवं चुनौतियां

आज दुनिया तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रही है. चाहे किसी क्षेत्र में नए अवसर की तलाश करनी हो, नए आविष्कार करने हो या विकास को गति प्रदान करनी हो, इन सभी में शहर काफी सहायक हैं. किन्तु यह भी सच है कि इन सभी प्रयोजनों के लिए शहरी नियोजन, आधारभूत संरचना, परिवहन और आवास अत्यंत आवश्यक हैं. सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals) के 11वें लक्ष्य का फोकस भी शहरों को सहज बनाना है ताकि आम जन को उपयुक्त और किफायती आवास प्रदान किए जा सके.

हमारे शहर और महानगरीय क्षेत्र आर्थिक विकास के पावरहाउस की तरह हैं जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 60 प्रतिशत का योगदान कर रहे हैं. हालाँकि इसके साथ ही वह वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में लगभग 70 प्रतिशत और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने में भी 60 प्रतिशत से अधिक का हिस्सा रखते हैं. इस तेजी से बढ़ते शहरीकरण के परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण और अनियोजित शहरी फैलाव भी बढ़ रहा है. जहां एक ओर कोविड-19 का प्रभाव गरीब और घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में सबसे अधिक दिखाई दे रहा है वहीं दूसरी ओर दुनिया भर में अनौपचारिक स्लम में रहने वाले एक अरब लोगों के लिए सामाजिक दूरी के उपायों का पालन करना मुश्किल है.

पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करने के लिए हमारे आवास का मजबूत होना भी जरूरी है. पर्यावरणविद् वंगारी माथाई के अनुसार, 'यह हमारी भूमि है और यहां पेड़ उगाना अर्थात् वृक्षारोपण करना हमारा मिशन है.'

एक सुरक्षित वर्तमान और भविष्य के निर्माण के लिए पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देना अति महत्वपूर्ण है.

पर्यावरण संरक्षण की राह में दुनियाभर में लगातार प्रदूषण के स्तर में वृद्धि एक विकट समस्या है. गावों की अपेक्षा शहरों में यह समस्या अधिक जटिल है. पर्यावरण प्रदूषण मुख्य रूप से चार प्रकार के हैं:

- वायु प्रदूषण
- जल प्रदूषण
- भूमि प्रदूषण और
- ध्वनि प्रदूषण

वायु प्रदूषण

मनुष्य द्वारा उपयोग किए जा रहे विविध माध्यमों के द्वारा वातावरण प्रदूषित हो रहा है. हमारे वायुमंडल में सभी प्रकार की गैसों का अनुपात निश्चित है. प्रकृति में संतुलन रहने पर इन गैसों की मात्रा में कोई विशेष बदलाव नहीं होते, परंतु किसी कारण से यदि गैसों के अनुपात में परिवर्तन हो जाता है तो वायु प्रदूषण की स्थिति आती है.

यातायात के नए साधनों से हमारे आवागमन के रास्ते सुगम होते हैं. परंतु दूसरी ओर ये पर्यावरण को प्रदूषित करने में अहम् भूमिका निभाते हैं. पेट्रोल और डीजल के जलने से उत्पन्न धुआं वातावरण को प्रदूषित करता है.

भूमि प्रदूषण

बढ़ती जनसंख्या के कारण मनुष्य के रहने का स्थान कम पड़ता जा रहा है. आवासीय स्थान बनाने के लिए वनों की कटाई की जा रही है. इससे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है और ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है, परिणामस्वरूप जमीन पर रहने वाले जीव-जंतुओं का भी संतुलन बिगड़ रहा है.

पेड़, भूमि की सतह को तेज वायु से उड़ने तथा पानी में बहने से बचाते हैं और भूमि उपजाऊ बनी रहती है. वृक्षों की लगातार कटाई से भूमि के बंजर बनने एवं रेगिस्तान बनने की संभावनाएं बढ़ रही हैं. प्रकृति के संतुलन में परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण है। बढ़ती आबादी से अनाज की मांग भी बढ़ गई है.

किसान अधिक फसल उत्पादन के लिए रासायनिक खादों का इस्तेमाल करते हैं एवं फसल को कीड़ों से बचाने के लिए कीटनाशकों का भी छिड़काव करते हैं, इससे भूमि प्रदूषित होती है.

जल प्रदूषण

आज अधिकांश शहर जल प्रदूषण और पानी की कमी से जूझ रहे हैं. औद्योगीकरण और बढ़ते शहरीकरण के कारण यह समस्या और गंभीर होती जा रही है. शहरों में अत्यधिक फ्लैट निर्माण वहां के भूमिगत जल भंडार पर अधिक दवाब पड़ रहा है. डीप बोरिंग के कारण भूमिगत जल का स्तर लगातार गिर रहा है.

औद्योगीकरण के बढ़ने से उद्योगों से निकलने वाले दूषित जल, अवशेष, रसायन कचरा आदि को नालियों के रास्ते नदी में बहा दिया जाता है. इसके अलावा कचरे, प्लास्टिक को भी नदी किनारे छोड़ दिया जाता है. इससे हमारी नदियां लगातार प्रदूषित हो रही हैं.

अवशेषों को भी सागर के जल में बहा दिया जा रहा है. जहाज की साफ-सफाई के पश्चात् गंदगी को प्रायः समुद्र के पानी में डाल दिया जा रहा है. इसके अलावा कभी-कभी किसी दुर्घटनावश जहाज डूब जाता है तो उसमें मौजूद रासायनिक पदार्थ, तेल आदि समुद्र के पानी में मिल जाते हैं जो लंबे समय तक उसमें रहने वाले जीव-जंतुओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है.

ध्वनि प्रदूषण

मानव सभ्यता अपने विकास के साथ-साथ आधुनिक उपकरणों से लैस होती गई और समान गति से ध्वनि प्रदूषण की समस्या विकराल व गंभीर हो गई है. तेज ध्वनि न केवल हमारी सुनने की शक्ति को प्रभावित करती है, बल्कि यह रक्तचाप, हृदय रोग, सिर दर्द, अनिद्रा एवं मानसिक रोगों का भी कारण है.

औद्योगीकरण विकास की प्रक्रिया में देश के कोने-कोने में विविध प्रकार के उद्योगों की स्थापना हुई है. इन उद्योगों में चलने वाले विविध उपकरणों से उत्पन्न आवाज से ध्वनि प्रदूषित होती है. यातायात के विभिन्न माध्यम चाहे वह जलमार्ग हो, वायु मार्ग हो या फिर भू-मार्ग, सभी तेज ध्वनि उत्पन्न करते हैं. वायुमार्ग में चलने वाले हवाई जहाज, रॉकेट एवं हेलीकॉप्टर की भीषण गर्जन ध्वनि भी प्रदूषण बढ़ा रही है. जहाजों का शोर एवं भू-मार्ग में चलने वाले वाहनों के इंजन की आवाज और हॉर्न ध्वनि-प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं.

प्रत्येक मनुष्य की कुछ मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं. मनुष्य के लिए भोजन और पानी के साथ ही आवास भी एक आधारभूत आवश्यकता है. कहा भी जाता है कि - A house is more than a place to live.

हम सभी को आवास की जरूरत है और जनसंख्या बढ़ने के साथ ही आवास संबंधी जरूरतें भी बढ़ रही हैं. मुंबई जैसे महानगर में झोपड़ी में रहने वाला व्यक्ति व परिवार चाहता है कि चॉल में ही सही लेकिन उसका खुद का एक कमरा हो. चॉल में रहने वाला व्यक्ति चाहता है कि एक सॉफिस्टकेटिड बिल्डिंग में उसका अपना एक फ्लैट हो.

निकट भविष्य में लोगों के जीवन जीने का तरीका आज से काफी बदल चुका होगा लेकिन फिर भी आवास की महत्ता तब भी कायम रहेगी. पहले जहां लोग भोजन और पानी के

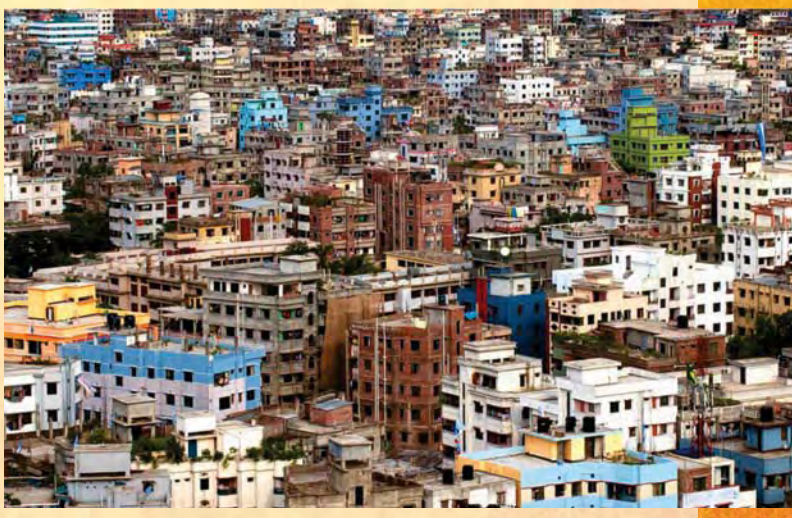

स्रोत के पास घर बनाना आवश्यक समझते थे वहीं आजकल घर में ही खाना स्टोर करने, तैयार करने और खाने के लिए अलग-अलग जगह है.

वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को देखें तो वायु प्रदूषण, जगह की कमी, आवास की बढ़ती कीमतें, पलायन, प्रवासी भारतीय व जलवायु परिवर्तन ने भी भविष्य के शहरों की जरूरतों में बदलाव लाया है. संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, जैसे-जैसे लोगों का जीवन काल बढ़ रहा है उससे भविष्य में आबादी की तुलना में आवश्यक आवास की संख्या भी तेजी से बढ़ेगी.

विकासशील देश जैसे-जैसे विकसित देशों के समान प्रगति करेंगे उसी अनुपात में जीवन स्तर में सुधार और जीवन प्रत्याशा में भी विस्तार होगा जिससे नए आवास की मांग भी अधिक होगी.

दिनोदिन बढ़ती आबादी और शहरीकरण से विशेषकर अफ्रीका और एशिया की आवास वितरण प्रणाली पर काफी दबाव बढ़ रहा है. एक अनुमान के मुताबिक वर्ष 2030 तक अफ्रीका की 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या शहरों में रह रही होगी और वर्ष 2050 तक, पूरी आबादी के दो तिहाई अर्थात 6.5 अरब लोग शहरों में रह रहे होंगे. जहां औपचारिक आवास प्रदान नहीं किया जा सकता, वहां अनौपचारिक आवास इस अंतर को कम करने की क्षमता तो रखते है लेकिन इस वजह से स्लम की संख्या काफी तादाद में बढ़ जाएगी और कई नई चुनौतियाँ उत्पन्न हो जाएंगी.

हालांकि, विकासशील देशों ने आवास और आवास वित्त हेतु अपने फ्रेमवर्क को बेहतर बनाने में काफी प्रगति की है, फिर भी किफायती आवास तक पहुँच प्रदान करने में अभी भी काफी बड़ा अंतर मौजूद है. IDA (आईडीए) यानी International Development Association, विश्व बैंक का वह भाग है जो विश्व के गरीब देशों की सहायता करता है. आईडीए का उद्देश्य उन कार्यक्रमों के लिए ऋण या अनुदान प्रदान करके गरीबी को दूर करना है जो आर्थिक वृद्धि में तेजी लाते हैं, असमानता को कम करते हैं और लोगों के जीवन जीने के तरीके को बेहतर बनाते हैं. भविष्य में अनेक देशों में अनौपचारिक क्षेत्रों में काम करने वाले निम्न आय वर्ग के परिवार हेतु मोर्टगेज सॉल्यूशन को विकसित करने की आवश्यकता है.

UN Population data के अनुसार, वर्ष 2030 तक विश्व को 300 मिलियन आवास की जरूरत होगी. गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या में भी एक चौथाई तक की कमी आई है जिसके भविष्य में निश्चित रूप से और कम होने की संभावना है. भविष्य में ऋण लेने का सामर्थ्य रखने वालों की संख्या में भी आशातीत वृद्धि होने की संभावना है.

इन सबके बीच भारत ने वर्ष 2022 तक 'सबके लिए आवास' का अपना लक्ष्य निर्धारित किया है. आवासीय चुनौतियों का सबसे ज्यादा सामना करने वाले देशों में से एक भारत भी है लेकिन भारत ने एक महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण अपनाया है.

भारत में निम्न आय आवास वित्त परियोजना हेतु कई चुनौतियां हैं. विश्व बैंक, भारत सरकार व हमारे बैंक मिलकर इस दिशा में काम कर रहे हैं ताकि उन लोगों को भी ऋण प्रदान किया जा सके जो या तो असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं या जिनके पास ऐसी अनौपचारिक संपत्ति तक उपलब्ध नहीं है जिसका उपयोग वे संपार्श्विक (कॉलेटरल) के रूप में कर सकें. उधारकर्ताओं को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए उधारदाता नई तकनीक का उपयोग कर रहे हैं और विकास के नए निर्माण मॉडल की तरफ रुख कर रहे हैं ताकि लागत को कम किया जा सके.

भारत द्वारा किए जा रहे ये उपाय भारत के साथ ही बांग्लादेश, इंडोनेशिया, फिलिपीन्स व अफ्रीका के कई देशों के लिए भी लाभकारी है जहां अनौपचारिक आय पर औपचारिक रूप से उधार देना अभी भी एक बड़ी चुनौती है.

सुश्री मनीषा
राजभाषा अधिकारी
जूनागढ़ क्षेत्र

बिना इंटरनेट जीवन

आज के इस आधुनिक युग में इंटरनेट ने मनुष्य के जीवन को बहुत ही आसान और ज्ञानवर्धक बना दिया है. हमें इंटरनेट और तकनीक का आभारी होना चाहिए कि आज हम इनके माध्यम से देश दुनिया से जुड़ पा रहे हैं और विश्व के कोने-कोने की सूचनाएं और समाचार हम तक पहुँच पा रहे हैं. हम इंटरनेट का उपयोग व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, स्कूलों, कॉलेजों, पारंपरिक कार्यक्रमों और निजी जीवन जैसे हर क्षेत्र में कर रहे हैं.

शुरुआती दौर में इंटरनेट के माध्यम से मात्र वेबसाइट ब्राउज किए जाते थे, ई-मेल भेजे जाते थे परंतु वर्तमान दौर में इंटरनेट को दुनिया के हर एक क्षेत्र में तकनीक से जुड़े हुए कार्यों के लिए उपयोग में लाया जा रहा है. यह कहा जा सकता है कि अब इंटरनेट मनुष्य की आवश्यकता बन चुका है.

इंटरनेट का बदलता स्वरूप : आधुनिक युग में, इंटरनेट दुनिया का सबसे शक्तिशाली और रोचक माध्यम बन गया है. इंटरनेट के द्वारा हम दुनिया के किसी भी कोने में स्थित कम्प्यूटरों को आपस में कनेक्ट कर सकते हैं. इंटरनेट हमें ई-मेल भेजने की सुविधा प्रदान करता है, सोशल मीडिया अर्थात फेसबुक, इन्स्टाग्राम, ट्विटर आदि और विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से मशहूर हस्तियों और दूर दराज क्षेत्रों में रह रहे अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है, वेब पोर्टल तक पहुँचने, सूचनात्मक वेबसाइट को पाने, वीडियो चैट करने और कई अन्य सुविधाएं प्रदान कर लाभान्वित करता है.

शैक्षणिक दृष्टिकोण : आज कल विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट बहुत ही उपयोगी हो गया है क्योंकि यह विद्यार्थियों के अध्ययन से संबंधित सामग्री प्रदान करता है. हालाँकि यह विद्यार्थियों के माता-पिता के लिए एक चिंता का भी विषय है क्योंकि उन्हें यह चिंता रहती है कि कहीं उनका बच्चा अवांछित वेबसाइटों को एक्सेस न करने लगे तथा गलत कार्यों में न लिप्त हो जाए. अतः ऐसे में माता- पिता को अपने बच्चे की निगरानी भी करनी पड़ती है.

मौजूदा दौर में महामारी के कारण लगभग सभी स्कूलों ने विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करनी शुरू कर दी हैं.

कंप्यूटरीकृत काम-काज: अधिकांश सरकारी कार्यालयों, विभिन्न मंत्रालयों, शैक्षणिक संस्थानों, स्वयं सेवी संस्थानों, उद्योगों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों आदि ने अपने काम काज को कंप्यूटरीकृत कर लिया है या यूं कहें कि पेपरलेस कर दिया है जो कि पर्यावरण की दृष्टि से लाभकारी है.

आमदनी का माध्यम : आज इंटरनेट, आमदनी का भी जरिया बन गया है. उद्योग जगत के बहुत से ऐसे कार्य होते हैं जिन्हें घर बैठ कर वेबसाइटों के माध्यम से भी किया जा सकता है. किए गए कार्यों की रिपोर्टिंग भी इंटरनेट के माध्यम से आसानी से की जा सकती है. इस प्रकार इंटरनेट की मदद से लोग घर से ही काम करके आमदनी कर रहे हैं.

ऑनलाइन खरीददारी : इंटरनेट की मदद से ऑनलाइन खरीददारी भी की जा सकती है.

ऑनलाइन बुकिंग इत्यादि : आज कल विभिन्न यात्रा टिकटों, फिल्म टिकटों तथा अन्य कार्यक्रमों के टिकटों की बुकिंग घर बैठकर भी की जा सकती है. अस्पतालों, भोजनालयों आदि स्थानों पर भी ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा है जो कि इंटरनेट के कारण ही संभव हो पाया है.

ऑनलाइन धन अंतरण तथा भुगतान : इंटरनेट की सहायता से हम घर बैठकर ही अपने बैंक खाते से दूसरों के

खाते में मोबाइल बैंकिंग, नेट बैंकिंग आदि के माध्यम से पैसे भेज सकते हैं. इसके लिए हमें बैंक जाने की जरुरत भी नहीं पड़ती है. इस प्रकार हम विभिन्न बिलों जैसे बिजली, पानी, गैस जैसी अन्य सुविधाओं के बिलों का ऑनलाइन भुगतान कर सकते हैं.

इंटरनेट के बिना जीवन

आज का दौर इंटरनेट का है. ऐसे में ये प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या होगा अगर इंटरनेट को बंद कर दिया जाए? इसे कुछ समय के लिए बंद किए जाने का असर अर्थव्यवस्था, सफ़र, कारोबार, कंपनी और मनोविज्ञान आदि पर होगा. इंटरनेट को अगर कुछ समय के लिए भी बंद कर दिया जाए तो इसका असर हमारी सोच से परे होगा.

एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 1995 में एक प्रतिशत से भी कम लोग ऑनलाइन थे. पश्चिमी देशों में इसका अधिक प्रयोग होता था. तब इंटरनेट को लेकर लोगों में एक उत्सुकता थी. आज 25 साल बाद पांच अरब से अधिक लोगों के पास इंटरनेट कनेक्शन है, पृथ्वी की आधी से अधिक आबादी ऑनलाइन है. ये संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है. हर एक सेकंड में 10 लोग इंटरनेट से जुड़ रहे हैं.

इंटरनेट का प्रयोग करने वालों के लिए साइबर हमला एक बड़ा खतरा है. ग़लत मकसद से काम करने वाले हैकर इंटरनेट यूजर्स को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचा सकते हैं. इसमें इंटरनेट एक्सेस से लेकर निजी जानकारियों को चुराए जाने का ख़तरा शामिल है.

कई बार सरकार खुद देश के भीतर इंटरनेट पर पाबंदी लगा देती है. मिस्र ने वर्ष 2011 में अरब स्प्रिंग के दौरान प्रदर्शनकारियों के आपसी संपर्क में बाधा डालने के लिए इंटरनेट कनेक्शन काट दिए थे. वर्ष 2019 में कश्मीर में भी इंटरनेट के कनेक्शन को कुछ समय के लिए काट दिया गया था ताकि शांति व्यवस्था कायम हो सके. तुर्की और ईरान में भी विरोध प्रदर्शनों के दौरान इंटरनेट कनेक्शन काट दिए गए थे. चीन ने भी अपने यहां इंटरनेट पर खुद ही रोक लगाई थी.

कभी-कभी साइबर हमले से देश को बचाने के लिए भी इंटरनेट कनेक्शन काटने की वकालत की जाती है.

देश जितना ही विकसित और बड़ा होता है वहां इंटरनेट को पूरी तरह बंद करना उतना ही मुश्किल होता है क्योंकि देश के भीतर और बाहर भी नेटवर्क के कई कनेक्शन होते हैं. इंटरनेट कुछ समय के लिए बंद कर दिया जाए तो इसका अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग असर होगा :

- अंतरिक्ष संबंधी गतिविधियों पर इंटरनेट के कनेक्शन न होने से अत्यंत बुरा असर पड़ता है. सौर तूफान से हमारे उपग्रह, पावरग्रिड और कंप्यूटर सिस्टम आदि ठप हो सकते हैं. ''जो काम बम और आतंकवाद नहीं कर सकता वो काम सौर प्रणाली में आई बाधा कर सकती है.''
- यदि इंटरनेट को कुछ दिनों के लिए भी बंद कर दिया जाए तो इसका अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर होता है. वस्तुओं के आयात - निर्यात संबंधी भुगतान तथा ऑनलाइन प्रक्रियाएं बाधित हो जाएँगी जिसका व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा.
- हालांकि कई मामलों में कुछ समय के लिए इंटरनेट बंद होने से लोगों की कार्यक्षमता बढ़ गई. अगर सारी कंपनियां हर महीने कुछ घंटों के लिए अपने कंप्यूटर बंद कर दें और लोग टाल दिए गए कामों को करें तो इसका कंपनी को फ़ायदा होगा.
- इंटरनेट के एक दिन न होने से यात्रा पर ज्यादा असर नहीं होगा परंतु यदि इंटरनेट कनेक्शन एक दिन से ज़्यादा समय के लिए कट जाए तो इसका यात्रा से जुड़े कारोबार पर

अच्छा असर नहीं होगा.

- छोटे कारोबारियों और शारीरिक श्रम करने वालों पर इंटरनेट कनेक्शन बंद पड़ने का बुरा असर पड़ेगा. बड़े पेशेवर और प्रबंधन से जुड़े लोगों पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव होगा.
- सीसीटीवी के अभाव में बच्चों को डे-केयर में छोड़ने वाली कार्यरत माताओं को भी परेशानी महसूस होगी. इंटरनेट की मदद से महिलाएं नैनी आदि के भरोसे अपने बच्चों को घर पर छोड़कर ऑफिस जाती हैं तथा सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी भी कर लेती हैं.
- इंटरनेट अगर बंद हो जाए तो मनोवैज्ञानिक रूप से भी बुरा असर होगा. इंटरनेट के आदी लोगों में बेचैनी बढ़ेगी और वे सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ जाएंगे.
- इंटरनेट की मदद से हम एक दूसरे से संवाद कर सकते हैं. इसके जरिए हम कहीं भी, कभी भी और किसी से भी बातचीत कर सकते हैं, दोस्तों-रिश्तेदारों से संपर्क में रह सकते हैं. इंटरनेट के अभाव में हम घर से दूर परिवार के सदस्यों विशेष रूप से अपने बच्चों से वीडियो चैटिंग आदि के माध्यम से सम्पर्क करने में असमर्थ होंगे.
- एक बार मेरा स्मार्टफोन घर पर छूट गया था. अचानक ख़्याल आया कि मैं जहां जा रहा हूं, मुझे ठीक से उस रास्ते का ही पता नहीं. रास्ता बताने के लिए गूगल मैप भी नहीं था. क्या होगा अगर कार अचानक ख़राब हो जाए. किसी को फोन करके मदद भी नहीं मांग सकूंगा. यह समस्या किसी के सामने भी आ सकती है.

आज कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के कारण उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियों में इंटरनेट के माध्यम से ही बहुत से लोग 'वर्क फ्रॉम होम' अर्थात् घर बैठ कर ऑफिस का कार्य कर पा रहे हैं तथा सामाजिक दूरी बनी है और ऑफिस का कार्य भी प्रभावित नहीं हुआ है.

यदि इंटरनेट का अस्तित्व नहीं होता तो लोग अधिक सामाजिक होते, दोस्तों और रिश्तेदारों से ज़्यादा मिलते. दरअसल इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले अधिकांश लोग उन लोगों से कम सामाजिक होते हैं जो इंटरनेट का इस्तेमाल नहीं करते हैं.

कुछ खास परिस्थितियों में, इंटरनेट कनेक्शन कटने से लोगों के बीच मेल-जोल बढ़ेगा, जैसे कि दफ्तर में सहकर्मी एक-दूसरे को ई मेल भेजने की जगह बातचीत करेंगे. बच्चे वीडियो गेम की जगह शारीरिक परिश्रम वाले खेलों को खेल सकेंगे.

वर्तमान दौर में, जो कि इंटरनेट युग बन चुका है, अधिकांश लोगों के लिए इंटरनेट के बिना एक दिन भी जीने की कल्पना वैसी ही है जैसे जल बिन मछली.

आर. के. सिन्हा
मुख्य प्रबंधक व शाखा प्रमुख
पंजाबी बाग शाखा, नई दिल्ली

कर्ज़दार

कई बार लोग कुछ ऐसा कर जाते हैं कि दिल भर आता है और उनकी अच्छाई बयाँ करने के लिए शब्द नहीं मिलते.

कोरोना की वजह से पिछले बुधवार तक आते-जाते बुखार की रुखसती के बाद इस सोमवार से मैंने शाखा जॉइन किया. ज़ाहिर है लंबी लड़ाई का असर शरीर और चेहरे पर साफ दिख रहा था. आते-जाते कई नियमित ग्राहक और सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य मेरे स्वास्थ्य पर चिंता जता गए. शरीर दर्द से टूट रहा था और बात करते-करते सांस फूल जाती.

लगा नहीं था कि हालात इस कदर इम्तेहान लेंगे. पता होता तो कुछ और दिन आराम कर लिया होता. खैर अब आये थे तो काम से जी चुराना तो नीयत गवारा करती नहीं है. इसलिए हमेशा की तरह थोड़ी धीमी गति से ही सही, पर काम में लग चुकी थी. तभी एक जाने-पहचाने चेहरे ने मास्क के झरोखे से झाँकती आँखों से मुस्कान का तोहफा दिया.

अरे मैम आप! कहां थीं आप? कैसे हो आप? आप आ गए तो सबकी सैलरी भी फटाफट क्रेडिट हो जाएगी. मेरी टेंशन खतम हुई चलो। एक साथ सवालों की झड़ी, मेरे लिए उनके माथे पर आई चिंता की लकीरें और अपने काग़ज़ात सम्हालते हुए उन्होंने कहा था.

जी मैम बिल्कुल! हमेशा की तरह कहकर मैंने मुस्कुरा दिया.

महीने का पहला हफ्ता उम्मीदों वाला होता है. सैलरी और पेंशन की राह तकते लोगों का इंतज़ार खत्म करता है ये हफ्ता. आप चाहे किसी भी ओहदे पर पहुँच जाएं पर वेतन जमा होने का मैसेज अलग ही सुकून देता है.

सौम्यता की मूरत, भारत सरकार के आयुष मंत्रालय की एक स्टाफ थीं. उनका ओहदा क्या है? मैंने यह जानने की कभी कोशिश नहीं की. उनका व्यवहार बहुत ही मित्रवत था. जब भी मिलती मुस्कुराहट उनके होंठों पर होती. उन्होंने मेरी ओर सैलरी की लिस्ट बढ़ाई और फिर गौर से मेरे चेहरे की तरफ देखकर कहा, ''आप तो बड़ी कमजोर हो गई है. अपना बहुत ध्यान रखिएगा.'' इतना कहकर वे चली गईं.

तकरीबन 15 मिनट बाद वे फिर से मेरे काउंटर की तरफ वापस आती दिखीं. उनके हाथ में एक आसमानी रंग का पैकेट था. उन्होंने वह पैकेट गार्ड को पकड़ाकर उसमें से कुछ निकाला. फिर मेरे पास आईं.

मैम! आपको ऐसे कमज़ोर देखकर दुख हुआ. इसलिए मैं अपनी डॉक्टर से मिल कर आई और आपकी तकलीफें उन्हें बताई. उन्होंने कहा कि आपको Long Covid के लक्षण हैं. कुछ दवाइयाँ लिखवा लाई हूँ. पर्ची में लिखी हर एक दवाई अपने साथ लाई थीं वे. सभी दवाइयों की डोज़ और उन्हें खाने का समय, सब अच्छे से समझाकर थोड़ी आश्वस्त हुई और फिर कहा, ''सब समय पर खानी हैं आपको. हमें जल्दी से हमारी पहले वाली मैम चाहिये.''

मैं नि:शब्द खड़ी उन्हें देखती रह गई. उनकी चिंता और संवेदनशीलता देखकर मेरा दिल भर आया था. मेरी ख़ातिर वापस जाकर इतनी कोशिश की उन्होंने. वो भी सिर्फ़ इसलिए कि मेरे पास कभी उनका कोई काम नहीं अटकता, जो कि ड्यूटी है मेरी. लेकिन मेरा ध्यान रखना उनकी ड्यूटी नहीं थी जिसे बख़ूबी निभाकर उन्होंने आज मुझे अपना कर्ज़दार बना दिया.

हर्षिता शर्मा 'हुनर'
एसएसआई पणजी शाखा
पणजी क्षेत्र

भाषा बहता नीर

क्र.	हिंदी	गुजराती	बंगला	मराठी
१.	बाजार में हमारी कंपनी का एक शो रूम है.	बजारमां अमारी कंपनीनो एक शो रूम छे.	एई बाजारे आमादेर कोम्पानीर एकटि शो-रूम' आछे.	बाजारात आमच्या कंपनीचे एक शो रूम आहे.
२.	यहां बच्चों के कपड़ों की एक नई दुकान खुल गई है.	अहीं बाळकोना कपडानी एक नवी दुकान खुली छे.	एखाने शिशुदेर पोषाकेर एकटि नोतुन दोकान खुलेछे.	इथे मुलांच्या कपड्यांचे नवीन दुकान उघडले आहे.
३.	आज हमने बहुत खरीददारी कर ली है.	आजे अमे बहु खरीदी करी छे.	आजके आमरा अनेक केनाकाटा कोरेछि.	आज आम्ही खूप खरेदी केली.
४.	यह दुकानदार मिलावट का सामान बेचता है.	आ दुकानदार मेळसेळवाळो सामान वेंचे छे.	एइ दोकानदारटि भेजाल जिनिस बिक्री करे.	हा दुकानदार भेसळयुक्त वस्तू विकतो.
५.	यहां से बाजार कितनी दूर है?	अहींथी बजार केटलुं दूर छे?	एखान थेके बाजार कतो दूरे?	येथून बाजार किती दूर आहे?
६.	क्या आप चेक स्वीकार करते हैं?	शुं तमे चेक स्वीकार करो छो?	आपनि कि चेक नैन?	आपण धनादेश स्वीकारता?
७.	इस घी का दाम बहुत ज्यादा है.	आ घडियाळनी कींमत बहु वधारे छे.	एइ घोी (घोीटि) बेश दामी.	ह्या घड्याळाची किंमत खूप जास्त आहे.
८.	क्या आप बाजार जा रहे हैं?	शुं तमे बजार जाव छो?	आपनि कि बाजारे जाच्छेन?	तुम्ही बाजारात जात आहात का?
९.	यह बाजार सोमवार को बंद रहता है.	आ बजार सोमवारे बंध रहे छे.	एई बाजारटि सोमबार बन्धो थाके.	हा बाजार सोमवारी बंद असतो.
१०.	मेरे साथ बाजार तक चलो.	मारी साथे बजार सुधी आवो.	आमार संगे बाजार पोर्जोन्तो चलो.	माझ्या सोबत बाजारा पर्यंत चल.
११.	बिजली के सामान की यह सबसे बड़ी दुकान है.	ईलेक्ट्रीकल सामाननी आ सौथी मोटी दुकान छे.	बैद्युतिक जन्त्रोपातिर एटिइ सबचेये बो दोकान.	हे विद्युत वस्तूंचे सर्वात मोठे दुकान आहे.
१२.	बाजार में सबसे अच्छा मिक्सर कौन सा है?	बजारमां सौथी सरस मिकसर कयुं छे?	बाजारेर मोध्ये कोनटि सब थेके भालो मिक्सार?	बाजारात सर्वोत्कृष्ट मिक्सर कोणता आहे?
१३.	क्या ये हरी सब्जियां ताजी हैं?	शुं आ लीला शाक भाजी ताजां छे?	एइ शाक-सोब्जीगुलि कि टाट्का?	या हिरव्या भाज्या ताज्या आहेत का?
१४.	यहां की हर दूसरी दुकान साड़ी की दुकान है.	आ बजारमां दर बीजी दुकान साडीनी छे.	एई बाजारेर प्रोत्येक द्वितीयो दोकानटि शाड़ीर दोकान.	इथली प्रत्येक दूसरी दुकान साडीची दुकान आहे.
१५.	मैं इतने बंडल नहीं उठा सकता.	हुं आटला बंडलो उठावी शकतो नथी.	आमि अयातोगुलि बान्डिल बोये निये जेते पारबोना.	मी इतके बंडल उचलू शकत नाही.

आइये ! सीखें भारतीय भाषाएं

क्र.	कन्नड	तेलुगु	तमिल	मलयालम
१.	पेटेयल्लि नम्मा कंपनिय ओन्दु शो रूम इदे.	बजारुलो मा कंपेनीकि ओक षो रूमु उंदि.	कडैत्तेरुविल् एंगळ् कंपेनिक्कु ओरु शो रूम् इरुक्किरदु.	अगाडियिल ञंगलुडे कम्पनियुडे ओरु षो रूम् उण्डु.
२.	मक्कळा उडुपुगळा ओन्दु होसा अंगडि इल्लि प्रारंभवागिदे.	इक्कड पिल्लल दुस्तुलु अम्मे कोत्त दुकाणं तेरिचारु.	इंगु कुळन्दैगळुक्कु पुदिय तुनिक्कडै तिरक्कप्पट्टुल्लदु.	इविडे कुट्टिकलुडे वस्त्रन्गल् विल्कुन्न पुतियोरु कड तुरन्नु.
३.	इवत्तु नावु तुम्बा खरीदि माडिद्देवे.	मेमु इव्वाळ चाला कोनुगोलु चेशामु.	इन्नु नांगळ् पेरुमळ-वु / एराळ-मान-पोरुट्कळ् वांगिनोम्.	नम्मल् इन्नु कुरे साधनंगल् वांगि.
४.	ई अंगडियवनु कलबेरके सामानुगळन्नु मारुत्ताने.	ई कोट्टुवाडु कल्ती सरुकुलु अम्मुताडु.	इन्द कडै-क्कार-र् कल-प्पड सामान्गळ् विर्कि-रार्.	ई पीडिकक्कारन् मायं चेर्त्त साधनंगलाणु विल्कुन्नतु
५.	इल्लिन्दा पेटेगे एष्टु दूरा?	इक्कडिनुंडि बाजारु एंत दूरंलो उंदि?	इंगि-रुन्दु कडै-त्तेरु एव्व-ळवु-तोलैवु इरुक्कि-दु?	इविडेनिन्नु अगाडियिलेक्यु एत्र दूरमुण्डु?
६.	नीवु चेक्कुगळन्नु स्वीकरिसुत्तीरा?	मीरु चेक्कु तीसुकुंटारा?	नींगळ् चेक् वांगिक्कोळ्-वीर्गळा?	निंगल् चेक् स्वीकरिक्युमो?
७.	ई गडियारक्के बहला हेच्चिना बेलेयागुत्तदे.	ई वाची खरीदु चाला एक्कुव.	इन्द-गडिकार-त्तिर्कु मिग-वुम् विलै अदिगम्.	ई वाच्चिन्टे विला वलरे अधिकामाणु
८.	नीवु पेटेगे होगुत्तिद्दीरा?	मीरु बजारुकु वेलुतुन्नारा?	नींगळ् कडै-वीदिक्कु पोगि-रीर्गळा?	निंगल् कडयिल पोकयाणो?
९.	ई पेटे सोमवारा मुच्चिरुत्तदे.	ई बजारुनु सोमवारंनाडु मूसिवेस्तारु?	इन्द कडैवीदि तिंगट्-किळ्मै मूडि इरुक्कुम्.	ई कड तिंकलाल्च
१०.	नन्न जोते पेटेगे बा.	नातो बजारु वरकु वस्तारा.	एन्नु-डन् कडै-वीदि वरै-क्कुम् वा.	तुरक्किल्ला
११.	इदु विद्युत्तु सामग्रिगळन्नु मारुव अति दोड्डा अंगडि.	इलक्ट्रिकल् सामान्लकु इदि अन्निटिकंटे पेद्द दुकाणमु.	इदु मिन्सार-पोरुट्-कळिन् मिगप्पेरिय कडै.	एन्टे कूडे कडयिल वरू.
१२.	पेटेयल्लि सिगुवा मिक्सरगळल्लि अत्युत्तमावादु यावुदु?	बजारुलोकेल्ल मंचि मिक्सी एदि?	इप्पो दु किडै-प्पदिल् मिग-सिरन्द मिक्सी एदु?	इलक्ट्रिक् उपकरणंगल्कु इताणु एट्टवुं वलिय कड.
१३.	ई हसिरु तरकारिगळु ताजा आगिवेये?	ई कायगूरलु ताजावेना?	इन्द-पच्चै काय्-गरिगळ् पुदियदा?	कडयिल किट्टुन्न एट्टवुं नल्ल मिक्सर एताणु?
१४.	इल्लिन प्रति इतर अंगडियु सीरे अंगडि.	इक्कडिं प्रति रेंडव दुकाणं चीरल दुकाणमे.	इंगु ओन्नुविट्टोरु कडै पुड-वै कडैयाग-इरुक्कि-दु.	ई पच्चक्करिकल् पुतियताणो?
१५.	इष्टोन्दु बंडलुगळन्नु नानु एत्तलारे.	नेनु इन्नि प्याकेट्लनु मोसुकु वेळ्ळलेनु.	एन्नाल् इव्व-ळवु मूट्टै सुमक्क / तूक्क मुडियादु.	इविडत्ते ओरो रण्डामत्ते कडयुं सारिक्कडयाणु.

कोविड-19 के बाद बैंकिंग में डिजिटल नवाचार

कोविड-19 संक्रमण के संभावित खतरे ने मानवीय व्यवहार को ऐतिहासिक रूप से प्रभावित किया है. शिक्षा से लेकर व्यापार तक और सामाजिक मेलजोल से लेकर आर्थिक संव्यवहार तक समस्त चीजें एकाएक बदलनी शुरू हो गई हैं. ग्राहक बैंक शाखाओं में जाने से कतरा रहे हैं. बैंककर्मी ग्राहकों के साथ शिष्टाचार के बदले नियम से पेश आने को विवश हैं.

अब वह समय आ गया है जो कुछ वर्ष पहले तक एक यूटोपिया था कि ग्राहक को किसी भी बैंकिंग/वित्तीय कार्य के लिए बैंक शाखा में आने की आवश्यकता ही न रहे. जिस तरह से विमुद्रीकरण ने डिजिटलीकरण को दिशा दी उसी प्रकार कोविड19 महामारी ने डिजिटलीकरण को गति प्रदान किया है. हालांकि यह महामारी विश्व समुदाय के लिए एक अभिशाप है किन्तु डिजिटलीकरण के संदर्भ में यह वरदान सरीखा है.

कॉन्टैक्टलेस बैंक खाता खुलवाने की सुविधा

मई-जून 2020 के महीने में भारत के कई निजी और सरकारी बैंकों ने ग्राहकों के लिए वीडियो केवाईसी की सुविधा शुरू की अब ग्राहकों को खाता खुलवाने के लिए बैंक की शाखा में जाने की जरूरत नहीं है.

खाता खोलने का यह तरीका कागज रहित है. इसमें कोई बायोमेट्रिक सत्यापन की आवश्यकता नहीं होती और इस तरह केवाईसी की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए बैंक (प्रतिनिधि) और ग्राहक को एक-दूसरे से संपर्क करने की जरूरत नहीं होती.

ऐप्लिकेशन प्रोग्राम इंटरफेस

कुछ बैंक मोबाइल ऐप के माध्यम से भी खाता-खुलवाने की सुविधा दे रहे हैं. इस तरह की तकनीक में ऐप्लिकेशन प्रोग्राम इंटरफेस (APIs) का इस्तेमाल किया जाता है.

एपीआई अधिकृत सरकारी प्लेटफॉर्म्स जैसे जीएसटी, कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय (एमसीए), नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल), इंपोर्ट एक्सपोर्ट कोड और आधार आदि से केवाईसी दस्तावेजों के सुरक्षित मान्यीकरण (वैलिडेशन) में सक्षम बनाता है. इस सुविधा के जरिए एकल स्वामित्व (प्रोपराइटरशिप), साझेदारी (पार्टनरशिप) फर्म और निजी व पब्लिक लिमिटेड कंपनियों समेत हर तरह के कारोबार के लिए चालू खाता भी खोला जा सकता है. आनेवाले समय में रेल टिकट की भांति ही बैंक में मोबाइल ऐप के माध्यम से खाता खुलवाना भी सरल हो जाएगा और अधिकतर ग्राहक इस सुविधा का उपयोग करेंगे.

वीडियो केवाईसी

वर्ष 2020 में केवाईसी नियमों में संशोधन को लेकर भारतीय रिज़र्व बैंक की अनुज्ञप्ति के अनुसार, ''केंद्रीय बैंक ने वीडियो आधारित कस्टमर आइडेंटिफिकेशन प्रोसेस (वीसीआईपी) को ग्राहक अनुमति आधारित वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में पेश किया है ताकि ग्राहक की पहचान करना आसान हो सके.''

अब वीडियो के माध्यम से बैंक अपने ग्राहकों की केवाईसी संबंधी औपचारिकताओं को पूर्ण कर सकेंगे. भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) ने मास्टर केवाईसी दिशानिर्देश में संशोधन किया है. अब केवाईसी की प्रक्रिया मोबाइल वीडियो बातचीत के आधार पर भी हो सकेगी.

इस नवाचार से सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले ग्राहकों का बहुमूल्य समय एवं संसाधन दोनों की बचत होगी. इसके अतिरिक्त

भारतीय रिज़र्व बैंक ने आधार और अन्य ई-दस्तावेजों के जरिये ई-केवाईसी और डिजिटल केवाईसी की सुविधा भी दी है. अब बैंक या वित्तीय संस्थान का अधिकारी पैन या आधार कार्ड और कुछ प्रश्नों के जरिये भी ग्राहक की पहचान कर सकेंगे. इसमें यह सुनिश्चित करना होगा कि वह विदेश में न हो और ऐसा करने के लिए ग्राहक की भू-स्थिति (जियो लोकेशन) आदि को कैप्चर करना होगा.

एमएसएमई पोर्टल, आधार और जीएसटीएन डेटा

26 जून 2020 को केंद्र सरकार ने ऑनलाइन पंजीकरण के लिए नए मानदंड घोषित किए. 1 जुलाई 2020 से उद्यम पंजीकरण करवाने के लिए दस्तावेज तथा प्रमाण पत्र अपलोड करने की आवश्यकता नहीं रही.

उद्यम पंजीकरण के तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के पंजीकरण की नई प्रक्रिया 1 जुलाई 2020 से शुरू हो गई है. अब सिर्फ आधार नंबर और स्व-घोषणा के साथ न्यू एंटरप्राइज रजिस्ट्रेशन करवाया जा सकता है. सरकार ने आयकर प्रणाली और जीएसटी के साथ उद्यम पंजीकरण प्रक्रिया को एकत्रित किया है. आनेवाले समय में बीमा कंपनी संपत्ति प्रबंधन कंपनियों, एनबीएफसी, निवेश सलाहकार और विनियमित फिनटेक कंपनियों को भी एक साझा फ्रेमवर्क मिल सकता है. वे ग्राहकों की सहमति के साथ उनके आधार का प्रयोग करते हुए उनका केवाईसी पूरा कर सकेंगे.

इसके अतिरिक्त गैर विनियमित उधारदाताओं पर एमएसएमई क्षेत्र की निर्भरता को कम करने के लिए, सुयोग्य फिनटेक कंपनियों को ऋण सेवा प्रदाता लाइसेंस, अकाउंट ऐग्रीगेटर्स की लाइसेंसयुक्त पहुँच और जीएसटीएन डेटा की पहुँच भविष्य में मिल सकती है जिससे ऋण के कई गैर -परंपरागत आयाम खुलेंगे एवं घर या कार्य स्थल पर बैठे ही ग्राहक को ऋण सुविधाएं मिलेंगी.

डिजिटल ऋण

- इसका अभिप्राय प्रमाणीकरण और क्रेडिट मूल्यांकन हेतु प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए वेब प्लेटफॉर्म या मोबाइल ऐप के माध्यम से ऋण वितरित करने की प्रक्रिया से है.
- बीते कुछ वर्ष में भारत के डिजिटल ऋण बाज़ार में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है, जहाँ एक ओर वित्तीय वर्ष 2015 में भारत में डिजिटल ऋण बाज़ार का कुल मूल्य 33 बिलियन डॉलर था, वहीं वित्तीय वर्ष 2020 में यह बढ़कर 150 मिलियन डॉलर पर पहुँच गया है. एक अनुमान के मुताबिक, वर्ष 2023 तक यह 350 बिलियन तक पहुँच जाएगा.
- बैंकों ने डिजिटल ऋण बाज़ार में नए अवसरों का लाभ प्राप्त करने के लिये अपने स्वतंत्र डिजिटल ऋण देने वाले प्लेटफॉर्म लॉन्च किये हैं.

कोविड-19 के बाद आनेवाले समय में निम्नलिखित बैंकिंग तकनीकों का प्रचलन बढ़ेगा:

- बैंकिंग मोबाइल ऐप
- कार्डरहित एटीएम मशीन
- आवाज आधारित लेन- देन
- डिजिटल आधारित ऋण पटल
- सी - केवाईसी
- डिजिटल लॉकर
- वीडियो आधारित लेन-देन
- ओटीपी आधारित लेन-देन
- वर्चुअल बैंकिंग

निष्कर्ष

- जिस प्रकार अल्प समय में पेटीएम, जोमैटो, ओला, बुक माय शो आदि ने बिना अपनी किसी भौतिक उपस्थिति के अपना व्यवसाय बढ़ाया है उसी तरह बैंकों के लिए शाखा विहीन बैंकिंग तथा ग्राहक को बैंक शाखा में बुलाए बिना उन्हें उत्कृष्ट ग्राहक सेवा देना, अपनी ब्रांड शक्ति को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हो जाएगा.
- डेटा के आधार पर ग्राहक के व्यक्तिगत अनुभवों को बेहतर बनाना बैंकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण होगा.
- बैंकिंग उद्योग में भी ब्रांड शक्ति इस बात पर निर्भर होगी कि उनकी साझेदारियां किन कंपनियों के साथ है.
- पारदर्शिता, निवेश के एकीकृत आर्थिक अवसर, तात्कालिक जानकारियां और सुझाव, बेहतर ग्राहक अनुभव, ये सारी बातें बैंकिंग के लिए निर्णायक होंगी. डिजिटलीकरण के कारण कई बैंकिंग पद्धतियां आसान और बेहतर होंगी. डिजिटल ब्रांड शक्ति बनाने के लिए बिलकुल स्पष्ट और तेज अंतर्विभागीय समन्वय होना चाहिए.

गौतम कुमार 'सागर'
मुख्य प्रबन्धक एवं संकाय
बड़ौदा अकादमी, वडोदरा

नराकास बैठकें

नराकास, गांधीनगर की छ:माही बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गांधीनगर की छ:माही बैठक 16 अप्रैल, 2021 को संपन्न हुई. इस बैठक में कार्यकारी अध्यक्ष (नराकास) श्री यशवीर चौधरी, डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य (उपनिदेशक, (कार्यान्वयन), भारत सरकार), प्रधान कार्यालय से श्री पुनीत कुमार मिश्र (सहायक महाप्रबंधक) एवं समस्त सदस्य कार्यालय उपस्थित रहे.

नराकास, अलीराजपुर की 6ठी छ:माही बैठक का आयोजन

दिनांक 29 जून 2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अलीराजपुर की 6ठी छःमाही बैठक का आयोजन किया गया. उक्त बैठक एलडीएम श्री सौरभ जैन जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. बैठक में श्री हरीश चौहान, सहायक निदेशक, कार्यालय अध्यक्ष व (राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय-मध्य क्षेत्र) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग मुख्य अतिथि के रूप में जुड़े.

नराकास, हिम्मतनगर की 11वीं छमाही बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति, हिम्मतनगर की 11वीं छमाही बैठक का आयोजन दिनांक 29 जून, 2021 को साबरकांठा क्षेत्र के अग्रणी जिला प्रबंधक श्री राजेन्द्र संडेरा की अध्यक्षता में किया गया. बैठक में साबरकांठा क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री हरेश पटेल, प्रधान कार्यालय से एवं संसदीय समिति प्रमुख- राजभाषा श्री संजय सिंह एवं भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की उप निदेशक डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं.

नराकास, राजकोट की 20वीं छमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 28 मई, 2021 को बैंक नराकास, राजकोट की 20वीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया. यह बैठक बैंक नराकास, राजकोट के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री संजीव डोभाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. बैठक में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य विशेष रूप से उपस्थित रहीं.

नराकास बैठकें

नराकास, राजकोट के तत्त्वावधान में प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 17 जून, 2021 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजकोट के तत्त्वावधान में राजकोट क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा भारतीय भाषाओं पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अशोक गोस्वामी ने किया.

बैंक नराकास, रायपुर द्वारा विजेताओं का सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर में दिनांक 17 मई, 2021 को, बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नेटवर्क उपमहाप्रबंधक, छत्तीसगढ़ श्री रंजीत कुमार मंडल एवं क्षेत्रीय प्रमुख, रायपुर श्री सत्यरंजन महापात्र द्वारा सम्मानित किया गया.

नराकास, जलंधर के तत्त्वावधान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), जालंधर के तत्वावधान में 18 जून, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, जालन्धर द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. माईक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से आयोजित इस कार्यशाला में सदस्य बैंकों के स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की.

ग़ज़ल

पेड़ को दर्द तो हुआ होगा,
हरा पत्ता अगर गिरा होगा।

हो रहे कम दरख़्त के साये,
धूप में आदमी जला होगा।

पेड़ हम गर नहीं लगाएं तो,
कैसे मंजर हरा–भरा होगा।

जंगलों को उजा कर रंजन,
शह्र कोई नया बसा होगा।

अम्ब्रेश रंजन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक,
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

विविध प्रतियोगिताएं

बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन

दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र द्वारा दिनांक 03 अप्रैल, 2021 को बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस दौरान मार्च, 2021 तिमाही में सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन करने वाले तीन स्टाफ सदस्यों को उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री संदीप कुमार के कर- कमलों से सम्मानित किया गया.

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस प्रतियोगिता के पुरस्कारों का वितरण

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस-2021 के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था. दिनांक 29 मई, 2021 को उक्त प्रतियोगिता में विजयी रहे प्रतिभागियों को उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अमित बैनर्जी द्वारा पुरस्कृत किया गया.

ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

भावनगर क्षेत्र 2 की मॉडल हिन्दी शाखा सारंगपुर हेतु 9 जून, 2021 को ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इसमें शाखा के सभी स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की.

पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता के समापन समारोह का आयोजन

दिनांक 16 जून, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय खेड़ा द्वारा पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता के समापन समारोह का आयोजन किया गया. यह प्रतियोगिता क्षेत्रीय प्रमुख श्री हेमेन्द्र चोकसी की अध्यक्षता में आयोजित की गई. विजेता प्रतिभागियों को निर्णायक मंडल एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मयुर पी ईदनानी द्वारा पुरस्कृत किया गया.

साहित्यकार परिचय : महादेवी वर्मा (26 मार्च, 1907 – 11 सितम्बर, 1987)

आधुनिक हिंदी कविता में महादेवी वर्मा एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरीं. उन्होंने अपनी भाषा खड़ी बोली हिंदी को संवेदनशील ग्राहिका के रूप में उपस्थित किया. महादेवी जी में कवि प्रतिभा सात वर्ष की उम्र में ही मुखर हो उठी थी. विद्यार्थी जीवन में ही उनकी कविताएं देश की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं. महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ एक विशिष्ट गद्यकार एवं चित्रकार भी थीं. उनकी कविताओं ने वेदना में जन्म लिया और करूणा में आवास पाया. उनका मानना था कि पीड़ा और वेदना का यह संसार नकारात्मक नहीं है. उनका प्रयास जीवन के स्पंदन और गहरे मर्म को उद्घाटित करने का रहा. उनकी प्रमुख रचनाएं - नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, अतीत के चलचित्र, यामा, पथ के साथी, मेरा परिवार आदि हैं.

स्रोत- https://rajbhasha.gov.in/

विविध प्रतियोगिताएं

आदर्श हिन्दी शाखा में बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता

अहमदाबाद क्षेत्र – 1 की आदर्श हिन्दी शाखा– लॉ गार्डन में शाखा प्रमुख श्री संजय कुमार राय, की अध्यक्षता में 03 जून, 2021 को साप्ताहिक आधार पर शाखा को भेजे जाए रहे बैंकिंग शब्दों पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. उक्त प्रतियोगिता में शाखा में कार्यरत सभी स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया.

बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन

बनासकाठा क्षेत्र की मालन शाखा के स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 29 जून, 2021 को बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. विजेता स्टाफ श्री संदीप मीना को हिन्दी की पुस्तक भेट कर सम्मानित किया गया एवं शाखा में बैठक का आयोजन कर राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सभी स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहित किया गया.

अहमदाबाद क्षेत्र – 2 द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय – 2 द्वारा 25 जून, 2021 को बैंक द्वारा मई, 2021 में जारी परिपत्रों के आधार पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 26 स्टाफ सदस्यों ने उत्साह पूर्वक प्रतिभागिता की.

अहमदाबाद क्षेत्र – 3 द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

अहमदाबाद क्षेत्रीय कार्यालय – 3 द्वारा 28 जून, 2021 को बैंक द्वारा मई, 2021 में जारी परिपत्रों के आधार पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 32 स्टाफ सदस्यों ने उत्साह पूर्वक प्रतिभागिता की.

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

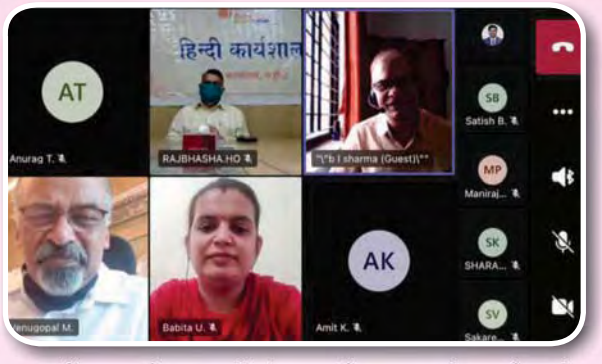

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा द्वारा दिनांक 6 मई, 2021 को कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) एवं प्रभारी–राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री वेणुगोपाल मेनन ने प्रतिभागियों को संबोधित कर उन्हें हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया.

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर:

1.	क	2.	ख	3.	ग
4.	ख	5.	घ	6.	ख
7.	क	8.	ख	9.	घ
10.	क	11.	ग	12.	ग
13.	ख	14.	क	15.	ख
16.	घ	17.	ग	18.	ग
19.	घ	20.	क		

विविध प्रतियोगिताएं

क्षेत्रीय कार्यालय मेहसाना द्वारा ऑनलाईन प्रतियोगिता आयोजित

क्षेत्रीय कार्यालय, महेसाना द्वारा स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 22 जून 2021 को परिपत्रों पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता का आयोजन गूगल फार्म्स के माध्यम से किया गया.

'कहानी का सार लिखो' प्रतियोगिता का आयोजन

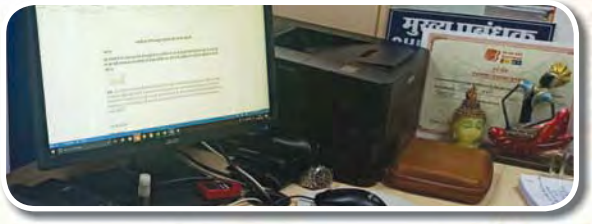

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग के स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 05 जून, 2021 को 'कहानी का सार लिखो' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में 27 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया.

राजभाषा उत्कर्ष शील्ड प्रतियोगिता

बड़ौदा जिला क्षेत्र में जून 2021 तिमाही के दौरान अप्रैल 2021 एवं मई 2021 हेतु आयोजित विभागीय राजभाषा उत्कर्ष शील्ड प्रतियोगिता के विजेता विभाग– क्रमशः आयोजना विभाग एवं मानव संसाधन विभाग रहे. दोनों विभागों को क्षेत्रीय प्रमुख, बड़ौदा जिला क्षेत्र श्री संजीव आनंद द्वारा शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया.

आदर्श हिन्दी शाखा में प्रतियोगिता का आयोजन

सूरत शहर क्षेत्र की आदर्श शाखा भटार रोड द्वारा दिनांक 04 जून, 2021 को शाखा के स्टाफ सदस्यों के लिए बैंकिंग सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों को शाखा प्रबंधक श्री शैलेश कुमार पाटनी के कर कमलों से सम्मानित किया गया.

वेबिनार/संगोष्ठी का आयोजन

नई दिल्ली अंचल द्वारा दिनांक 15 जून, 2021 को अंचल के ग्राहकों के लिए हिन्दी माध्यम से डिजिटल लेंडिंग विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया. बड़ौदा अकादमी, नई दिल्ली की संकाय सदस्य एवं वरिष्ठ प्रबन्धक श्रीमती श्रुति मलिक द्वारा डिजिटल लेंडिंग विषय पर हिन्दी माध्यम से सत्र लिए गए.

भाषा द्वारा व्यवसाय वृद्धि विषय पर वेबिनार का आयोजन

दिनांक 26 मई, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिशूर द्वारा समस्त स्टाफ सदस्यों हेतु प्रादेशिक 'भाषा द्वारा व्यवसाय वृद्धि' विषय पर वेबिनार आयोजित किया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ क्षेत्रीय प्रमुख श्री गोपा कुमारजी के मार्गदर्शी संबोधन से किया गया.

आदर्श शाखा, भायली (बड़ौदा क्षेत्र) द्वारा राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 08 जून, 2021 को आदर्श की शाखा भायली (बड़ौदा जिला क्षेत्र) में राजभाषा संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर शाखा प्रमुख श्री चन्दन कुमार, क्षेत्र के राजभाषा प्रभारी श्री राजेश कुमार महतो एवं शाखा के समस्त स्टाफ सदस्यगण उपस्थित थे.

बदलती जीवन शैली में रिश्तों की अहमियत

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार!!
रहिमन फिरि फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार!!

अर्थात् यदि आपका प्रिय सौ बार भी रूठ जाए तो उस रूठे हुए प्रिय को उसी प्रकार मना लेना चाहिए जिस प्रकार यदि मोतियों की माला टूट जाती है तो उन मोतियों को बार-बार धागे में पिरो लिया जाता है. हमें अपने प्रिय रिश्तों को नहीं खोना चाहिए. रिश्तों के टूटने पर भी उन्हें जोड़ने का प्रयास करना चाहिए. अच्छे दोस्त और सच्चे रिश्ते एक ही बार मिलते हैं, हमें माफ़ करके उन्हें सुधार लेना चाहिए.

आजकल की व्यस्त जिंदगी में लोगों के पास समय कम होता है जिसके कारण रिश्तों की गर्मजोशी भी कम होती जा रही है. लोग आजकल अपने आप में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों तक का एहसास नहीं रहता है. किसी भी रिश्ते में प्यार होना जरूरी ही नहीं बल्कि परमावश्यक है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और रिश्तों में कड़वाहट होने से मन में मानसिक अशांति पैदा हो जाती है.

रिश्तों में अपनेपन की भावना की खातिर ही व्यक्ति एक-दूसरे पर मर-मिटने के लिए भी तैयार हो जाते हैं. एक मां के अंदर प्रारंभ से ही अपने बच्चे के प्रति बेहद अपनेपन की भावना कायम हो जाती है. उसे अपना बच्चा सारी दुनिया से प्रिय व सुंदर लगता है. मनोवैज्ञानिक पीटर एम. नार्डी भी यह मानते हैं कि अकेले व्यक्ति को भौतिक, भावनात्मक, मानसिक व आर्थिक सहयोग नहीं मिल पाता है. करीबी रिश्तेदारों से व्यक्ति अक्सर अपने मन की वे सभी बातें करते हैं जिन्हें वे अन्य व्यक्तियों से नहीं कर सकते हैं. रिश्तेदार व परिवार व्यक्ति के बुरे समय में साथ खड़े होते हैं. ऐसे में एक अकेले व्यक्ति की पीड़ा पूरे परिवार व रिश्तेदारों की पीड़ा बन जाती है. वे एकजुट होकर मुसीबत से लड़ते हैं और मुसीबत को दूर भगा कर कामयाबी पाते हैं.

रिश्ते निभाना भी समझौतों का ही दूसरा नाम है. रिश्ते केवल खून के ही नहीं होते, भावनात्मक भी होते हैं. कई बार भावनात्मक रिश्ते अटूट बन जाते हैं, क्योंकि उनमें प्रेम, सामंजस्य, धैर्य, ईमानदारी का साथ होता है. रिश्ते हमारे जीवन की वे फ़सलें होती हैं जिन्हें जिस तरीके से सींचा जाता है वो उसी के अनुसार पैदावार देती हैं. यह ज़रूर है कि उनमें ग़म और खुशी के मौसमों की मार पड़ती रहती है लेकिन ज़रूरी ये है कि इन सबके बावजूद उसकी हिफ़ाजत की जाए. आपसी रिश्तों में मजबूती बनाए रखने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख निम्नानुसार है :

एक-दूसरे को समझें : रिश्तों में मधुरता लाने के लिए आवश्यक है कि एक-दूसरे की आवश्यकताओं को समझा जाए. कभी-कभी कुछ कारणों से दोनों में से किसी एक को लगने लगता है कि दूसरा उसे नजरअंदाज कर रहा है. जरूरी है कि ऐसी भावनाओं को पनपने न दें. अगर आप अपने साथी की इच्छाओं की कद्र करेंगे, तो आपके रिश्ते की डोर और मजबूत होगी.

रिश्तों की सिलाई अगर भावनाओ से हुई है तो टूटना मुश्किल है और अगर स्वार्थ से हुई है तो टिकना मुश्किल है

जिम्मेदारी समझें : अक्सर हम व्यस्तता के कारण पारिवारिक जिंदगी को प्राथमिकता देना बंद कर देते हैं जिससे रिश्तों में कलह हो जाती है. अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों पर लगातार ध्यान दें. अपने बच्चों की पढ़ाई व घर की जरूरतों को ध्यान में रखें.

''परिवार के सदस्यों के संयुक्त प्रयासों से ही घर-एक मंदिर बनता है.''

विश्वास मजबूत करें : विश्वास, किसी भी रिश्ते को मजबूत आधार देता है. अगर परिवार में किसी के साथ आपके बेहतर संबंध नहीं हैं तो कहीं न कहीं इसके पीछे विश्वास का कम होना भी है. रिश्तों में विश्वास पक्का करें. कभी-कभी लगता है कि अमुक व्यक्ति के स्वभाव में बदलाव हो रहा है, लेकिन यह महज परिस्थितिवश भी हो सकता है.

गलत भाषा का प्रयोग : मशहूर स्पीच थेरेपिस्ट बिल वाल्टन का मानना है कि रिश्तों को बिगाड़ने में 50 फीसदी से ज्यादा कारण असंयमित भाषा होती है. आध्यात्म और शांति के साथ कार्य करने वाले व्यक्तियों के रिश्ते बेहद सफल होते हैं. आज-कल रिश्ते इसीलिए खराब होते जा रहे हैं कि व्यक्ति अपनी जरूरतों और महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में या तो संवाद नहीं करते हैं या तो वे इसे आक्रामक,

विस्फोटक या असम्मानजनक तरीके से करते हैं. सम्मानपूर्वक बात करना भी सबसे महत्वपूर्ण कारण है.

''किसी भी रिश्ते को कितनी भी खूबसूरती से क्यों न बांधा जाए अगर नज़रों में इज्जत और बोलने में लिहाज न हो तो वह टूटने की कगार पर पहुँच जाता है.''

दूसरों के विचारों का सम्मान करें : हर आदमी के स्वभाव में भिन्नता होती है. उसकी यह भिन्नता उसे दूसरों से अलग पहचान प्रदान करती है. ऐसे में कभी-कभी कुछ चीजों के नजरिए को लेकर आपस में विरोधाभास की स्थिति बन जाती है. ऐसे विशिष्ट गुणों को पहचानने की कोशिश करें और अवगुणों को अनदेखा करें.

गुणवत्तापरक समय व्यतीत करें : अपने व्यस्त कार्यक्रमों में से कम से कम दिन में एक बार कुछ लम्हे साथ बिताएं. घरवालों के साथ बैठ कर बातें करें. एक-दूसरे की तकलीफों के भागीदार बनें. उस दिन सारी उलझनों और दिक्कतों को एक तरफ रख दें. महीने में कम से कम एक बार सैर या पिकनिक पर जाएं.

समय की कमी : आजकल हमारे समय का लाभ टेक्नोलॉजी ले रही है. हम अपना समय अपनों को न देकर टेक्नोलॉजी को दे रहे हैं. रिश्ते बनाना तो आसान है मगर निभाना मुश्किल है. इसलिए रिश्तों की अहमियत को समझें, अपने इन मीठे रिश्तों के लिए भी वक़्त निकालें और अपनों के साथ भी वक़्त बिताएं. अपनों के साथ बिताए वक़्त से जो ख़ुशी आपको मिलेगी वो आपको दुनिया में कहीं नहीं मिलेगी. आज के इस बदलते परिवेश में रिश्तों के मायने ही बदल गए हैं. रिश्तों को सिर्फ सोशल मीडिया के माध्यम से ही निभाया जा रहा है जिससे रिश्तों में भावनात्मक जुड़ाव नहीं हो पाता है.

प्रशंसा व अभिनंदन : प्रशंसा भाव से रिश्ते पल्लवित होते हैं. आपसी रिश्तों में मिठास बनाए रखने के लिए हमें धन्यवाद, शुक्रिया, बहुत अच्छा, माफी आदि शब्दों का प्रयोग करते रहना चाहिए. स्नेह करना, प्यार से गले लगाना, हर किसी को अपने करीबी रिश्तों की सराहना और पोषण करने की आवश्यकता है.

सुनना : पहले 'सुनना' सबसे महत्वपूर्ण संचार कौशल हुआ करता था. आज एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की बात सुनने के लिए तैयार नहीं होता है. रिश्तों को बचाने के लिए, दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने के लिए समय निकालना तथा उन्हें सुनना अति महत्वपूर्ण होता है.

माफी और क्षमा : आज गलती हो जाने पर भी कोई माफी नहीं माँगना चाहता है बल्कि लोग खुद को सही साबित करने में लग जाते हैं. इससे कई बार करीबी रिश्तों में निराशा का सामना करना पड़ता है. यह समझना बेहद ज़रूरी है कि अहंकार को छोड़ कर माफ़ी मांगने से आप अपने रिश्तों को बचाते हैं. लोग मन में बदले की भावना को लेकर बैठे रहते हैं. बदले की भावना भी रिश्तों को ख़त्म कर देती है.

कुएं में उतरने वाली बाल्टी यदि झुकती है
तो भर कर बाहर निकलती है.
ज़िन्दगी का भी यही गणित है जो झुकता है
वह बहुत कुछ प्राप्त करता है.

एक शोध के अनुसार जिन लोगों का पारिवारिक या सामाजिक जुड़ाव कम होता है उनमें दिल की बीमारियों और रक्त संचारण की समस्याओं के खतरे बढ़ जाते हैं. वहीं जिन लोगों के दोस्त और पारिवारिक बंधन मजबूत होते हैं, वे जल्दी-जल्दी बीमार नहीं होते हैं. उनका स्वास्थ्य अच्छा होता है और आयु भी लंबी होती है. दोस्त, रिश्तेदार और परिवार दवा भी बन जाते है. इसके लिए व्यक्ति को प्रेम, दुआ, विनम्रता और मदद का मार्ग पकड़ लेना चाहिए. इससे ये बंधन मजबूत होकर जीवन को सशक्त, रोगहीन और सफल बनाने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं.

यदि रिश्ते मधुर हों तो जीवन सुखमय व खुशहाल बन जाता है, किन्तु रिश्तों में खटास आते ही व्यक्ति भी टूट जाता है. व्यक्ति को अहम त्याग देना चाहिए, सकारात्मक सोच व सुशील व्यवहार से रिश्तों में मिठास बनाए रखनी चाहिए क्योंकि किसी ने कहा है कि:-

न मैं कभी खुद को गले लगा पाया,
न मैं अपने कंधे पर सर रखकर रोया।
अपनों के बिना खुद को बहुत अकेला पाया,
खुशहाल रिश्तों ने मुझे सुखी बनाया।
अपनत्व के सागर में खुद को डुबाया,
रिश्तों से मुनाफ़ा नहीं जीवन अमीर बनाया।
आदतों को खोया, चाहतों को खोया,
तब जाकर रिश्तों को एक माला में पिरोया।

नीलम परमार
प्रबंधक, भजनपुरा शाखा,
दिमक्षे - 3, नई दिल्ली

अभिप्रेरणा कार्यक्रम/ कार्यशालाएं

नई दिल्ली अंचल

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 19 जून,2021 को एमएस टीम के माध्यम से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में राजभाषा नीति नियम, ऑनलाइन तिमाही प्रगति रिपोर्ट, बैंकिंग शब्दावली व पत्राचार की जानकारी दी गई.

राजकोट अंचल

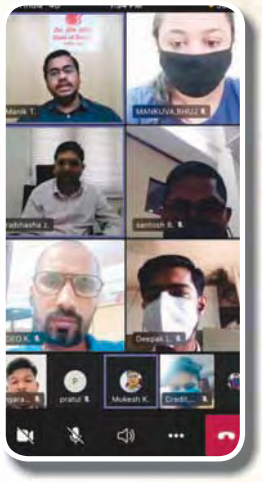

दिनांक 05 जून, 2021 को राजकोट अंचल कार्यालय द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

एर्णाकुलम अंचल

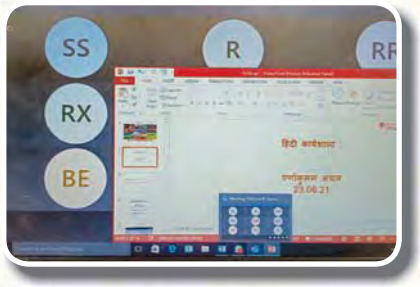

एर्णाकुलम अंचल द्वारा दिनांक 23 जून 2021 को शाखाओं में कार्यरत अधिकारियों के लिए माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 17 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया.

कोलकाता अंचल

कोलकाता अंचल की शाखाओं के स्टाफ सदस्यों हेतु दिनांक 18 जून, 2021 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का उद्घाटन उप अंचल प्रमुख व उप महाप्रबन्धक श्री पी.के.दास द्वारा किया गया.

अहमदाबाद अंचल

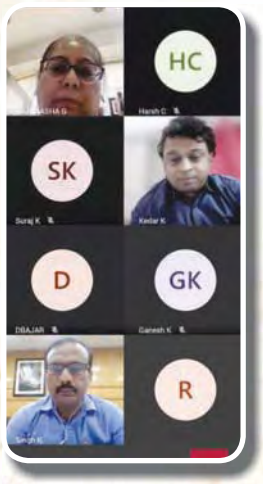

अहमदाबाद अंचल, बड़ौदा अकादमी एवं सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के सहयोग से दिनांक 11 मई 2021 को शाखाओं में पदस्थ हिन्दी प्रेरकों हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में श्री संजय सिंह, प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति द्वारा मार्गदर्शी वक्तव्य प्रस्तुत किया गया.

बड़ौदा अंचल

अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा 4 जून, 2021 को अंचल की शाखाओं के राजभाषा प्रेरकों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन अंचल प्रमुख, श्री अजय कुमार खोसला की अध्यक्षता में किया गया.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम/ कार्यशालाएं

चंडीगढ़ अंचल

अंचल की विभिन्न शाखाओं के स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 23 जून 2021 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. प्रतिभागी सदस्यों को राजभाषा के नीति-नियमों के अतिरिक्त यूनिकोड के प्रयोग की जानकारी दी गई.

भोपाल अंचल व क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

अंचल कार्यालय, भोपाल व भोपाल क्षेत्र के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 24 जून, 2021 को भोपाल अंचल की आदर्श हिंदी शाखाओं एवं नराकास सदस्य शाखा तथा अन्य शाखाओं हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

जबलपुर व सागर क्षेत्र

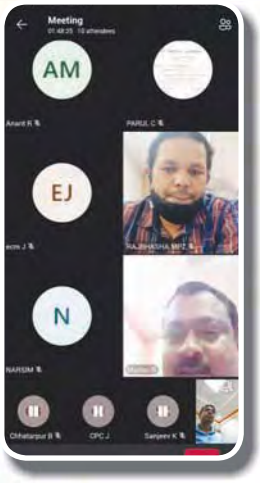

जबलपुर व सागर क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों हेतु दिनांक 15 जून, 2021 को क्षेत्रीय प्रमुख, जबलपुर क्षेत्र श्री मदन पाल सिंह, सहायक महाप्रबन्धक एवं क्षेत्रीय प्रमुख सागर क्षेत्र श्री अनंत माधव, सहायक महाप्रबन्धक की संयुक्त अध्यक्षता में एक दिवसीय ऑनलाइन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

रायपुर तथा बिलासपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर तथा बिलासपुर क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों हेतु दिनांक 05 जून, 2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में क्षेत्रीय प्रबंधक, रायपुर श्री सत्यरंजन महापात्र तथा क्षेत्रीय प्रबंधक, बिलासपुर श्री बरून मेहेर ने प्रतिभागियों को संबोधित किया.

हैदराबाद क्षेत्र

दिनांक 17 जून, 2021 को हैदराबाद अंचल द्वारा हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय स्टाफ सदस्यों के लिए राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

विजयवाड़ा क्षेत्र

विजयवाड़ा क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 22 जून, 2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एस आर टैगोर ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया. शाखा के आंतरिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग, राजभाषा नियम एवं अधिनियम, यूनिकोड आदि से संबंधित जानकारी सत्र में दी गई.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम/ कार्यशालाएं

तेलंगाना उत्तर क्षेत्र

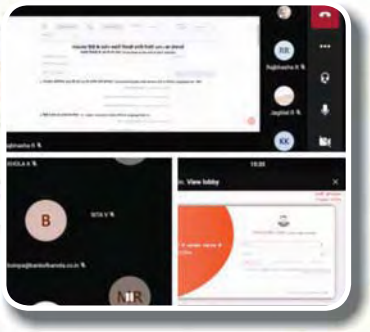

तेलंगाना उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 17 जून, 2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. उक्त कार्यशाला में प्रगति ऑनलाइन पोर्टल और राजभाषा नियम एवं अधिनियम से संबंधित सत्र लिए गए.

भावनगर क्षेत्र एवं भावनगर 2 क्षेत्र

भावनगर क्षेत्र एवं भावनगर 2 क्षेत्र द्वारा संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 25 जून 2021 को किया गया. हिन्दी कार्यशाला को डॉ. नवीन कुमार, क्षेत्रीय प्रबंधक, भावनगर क्षेत्र – II एवं उपस्थित अन्य कार्यपालक ने संबोधित किया.

कालिकट क्षेत्र

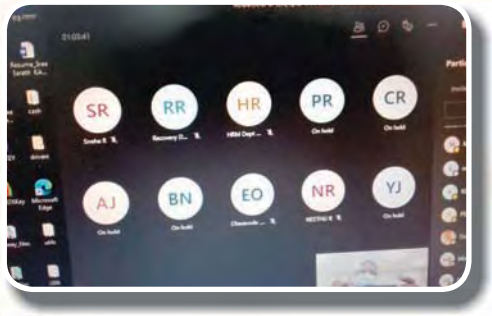

कालिकट क्षेत्र द्वारा दिनांक 18 जून, 2021 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से घर से कार्यरत स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

एर्णाकुलम क्षेत्र

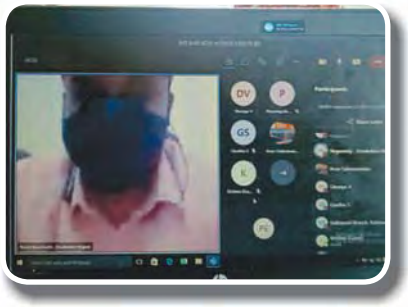

एर्णाकुलम क्षेत्र द्वारा दिनांक 30 जून, 2021 को हिंदी प्रेरकों के लिए माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 11 हिंदी प्रेरकों ने भाग लिया.

मदुरै क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै द्वारा दिनांक 7 और 8 जून, 2021 को हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत परीक्षा देने वाले स्टाफ सदस्यों के लिए पुनश्चर्या कार्यशाला का आयोजन किया गया.

नागपुर क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर द्वारा सभी शाखाओं हेतु दिनांक 23 जून, 2021 को ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में क्षेत्रीय प्रबंधक श्री संजीव सिंह ने प्रतिभागियों को संबोधित किया.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम/ कार्यशालाएं

पुणे शहर क्षेत्र

पुणे शहर क्षेत्र की समस्त शाखाओं हेतु दिनांक 19 जून, 2021 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में पुणे शहर क्षेत्र की सभी शाखाओं ने भाग लिया. कार्यशाला का शुभारंभ क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी.के. पंचोरी के अभिभाषण से हुआ एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री विकास कुमार भी इस कार्यशाला से जुड़े.

कोलकाता मेट्रो क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो द्वारा दिनांक 25 जून,2021 को क्षेत्राधीन शाखाओं के स्टाफ सदस्यों हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में क्षेत्रीय प्रमुख व उप महाप्रबंधक श्री गोबिन्दा बिश्वास ने प्रतिभागीयों को संबोधित किया.

बृहत्तर कोलकाता क्षेत्र

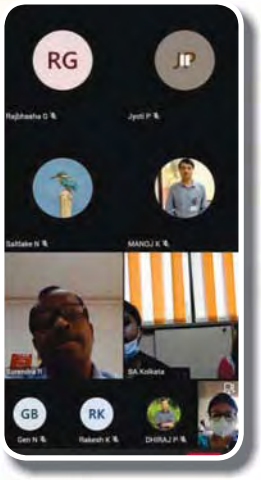

दिनांक 25 मई 2021 को बृहत्तर कोलकाता क्षेत्र द्वारा क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेन्द्र गोंड की अध्यक्षता में हिन्दी कार्यशाला एवं बैंकिंग क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

बर्द्धमान क्षेत्र

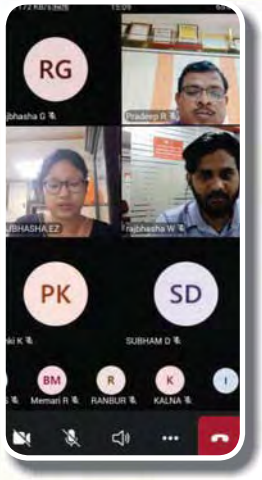

क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान द्वारा दिनांक 30 जून, 2021 को माईक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से शाखाओं में पदस्थ हिन्दी प्रेरकों हेतु क्षेत्रीय प्रमुख श्री प्रदीप कुमार बेहरा की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यशाला एवं अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

नवसारी तथा वलसाड क्षेत्र

नवसारी तथा वलसाड क्षेत्र द्वारा दिनांक 23 जून 2021 को संयुक्त रूप से क्षेत्रों के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में स्टाफ सदस्यों को राजभाषा नीति-नियम की जानकारी देने के साथ यूनिकोड टाइपिंग आदि की भी जानकारी दी गई

सूरत शहर क्षेत्र

सूरत शहर क्षेत्र द्वारा दिनांक 09 जून, 2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा नीति-नियम, तिमाही प्रगति रिपोर्ट, बैंकिंग शब्दावली एवं पत्राचार के बारे में बताया गया.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम/ कार्यशालाएं

वाराणसी क्षेत्र–1

18 जून, 2021 को वाराणसी क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री एच एस प्रसाद के मार्गदर्शन में एमएस टीम्स के माध्यम से क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई.

भरूच क्षेत्र

दिनांक 25 जून, 2021 को भरूच क्षेत्र की शाखाओं के राजभाषा प्रेरकों एवं अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का उद्घाटन श्री डी. के. चौधरी, उप क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा किया गया. कार्यशाला को प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह ने विशेष रूप से संबोधित किया.

सूरत जिला एवं सूरत शहर क्षेत्र – 2

सूरत जिला तथा सूरत शहर–2 क्षेत्र द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 18 जून, 2021 को क्षेत्र के सभी स्टाफ सदस्यों के लिए वर्चुअल हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर सूरत जिला के क्षेत्रीय प्रमुख श्री अश्विनी कुमार एवं सूरत शहर–2 के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री आशुतोष कुमार भी उपस्थित रहे. कार्यशाला को प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह ने विशेष रूप से संबोधित किया.

गोरखपुर क्षेत्र

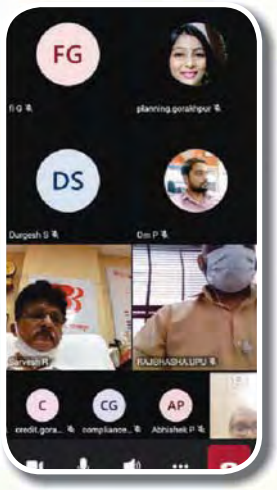

क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन क्षेत्रीय प्रमुख और समिति के अध्यक्ष श्री सर्वेश कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में दिनांक 30 जून, 2021 को किया गया.

शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु ग्राहक का सम्मान

दिनांक 24 जून, 2021 को शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु भरूच क्षेत्र की चयनित मॉडल हिंदी शाखा अंकलेश्वर मेन के शाखा प्रमुख श्री दीपक सिंह रावत द्वारा जून तिमाही के अंतर्गत शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु महत्वपूर्ण ग्राहक श्री रवि केलकर को सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी क्षेत्र

नवसारी क्षेत्र द्वारा एक नवोन्मेषी पहल की गयी तथा सभी विभागों के नामपट्ट के साथ उससे संबंधित प्रेरक पंक्ति हिन्दी में लिखकर लगाई गयी. महाप्रबंधक, बड़ौदा अंचल श्री अजय कुमार खोसला, 23 जून, 2021 को नवसारी दौरे पर गए. नवसारी क्षेत्र के दौरे के दौरान इस पहल के लिए अंचल प्रमुख ने क्षेत्र को सराहा तथा क्षेत्र की इस पहल को अनुकरणीय बताया.

विविध आयोजन

पुणे अंचल की हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' का विमोचन

दिनांक 19 जून, 2021 को अंचल समिति की बैठक के दौरान अंचल की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' के जनवरी-मार्च 2021 अंक का विमोचन अंचल प्रमुख श्री मनीष कौरा एवं अंचल के सभी कार्यपालकों द्वारा वर्चुअल रूप से किया गया.

चंडीगढ़ अंचल की पत्रिका 'अन्वेषी' का विमोचन

चंडीगढ़ अंचल की पत्रिका 'अन्वेषी' के जनवरी – मार्च 2021 अंक का विमोचन अंचल प्रमुख श्री एम.एल. रोहिल्ला, उप अंचल प्रमुख श्री सुरेश गजेन्द्रन, सहायक महाप्रबंधक श्री आर डी नेगी व मुख्य प्रबन्धक श्रीमती शालिनी कटियार द्वारा किया गया.

राजभाषा अधिकारियों की समीक्षा बैठक का आयोजन

अंचल प्रमुख, कोलकाता अंचल श्री देबब्रत दास की अध्यक्षता में दिनांक 28 जून, 2021 को कोलकाता अंचल के राजभाषा अधिकारियों की राजभाषा विषयक बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर अंचल के सभी राजभाषा अधिकारियों द्वारा अपने अपने क्षेत्रों में निष्पादित किए गए राजभाषा संबंधी कार्यों से अवगत कराया गया.

अहमदाबाद अंचल की पत्रिका 'गुजमैत्री' का विमोचन

अहमदाबाद अंचल की पत्रिका 'गुजमैत्री' के नवीनतम अंक का विमोचन महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री एम.एम.बंसल, द्वारा अंचल समिति की बैठक में किया गया. उक्त बैठक में सभी क्षेत्रीय प्रमुख, सीएफएस प्रमुख, बड़ौदा अकादमी, अहमदाबाद के प्रमुख उपस्थित थे.

बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' के नये अंक का प्रकाशन

बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' के मार्च 2021 अंक का विमोचन श्री ए. कुमार खोसला, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, बड़ौदा अंचल द्वारा दिनांक 11 जून, 2021 को किया गया. इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री पी. एस. नेगी तथा अन्य कार्यपालक गण एवं स्टाफ सदस्यगण उपस्थित थे.

एपेक्स अकादमी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

एपेक्स अकादमी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 17 जून 2021 को संपन्न हुई. इस बैठक में प्रधानाचार्य श्री दीपांकर गुहा, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, एपेक्स अकादमी से सहायक महाप्रबंधक श्री मुकेश नवल एवं समस्त अकादमियों के संकाय व शिक्षण प्रमुख उपस्थित रहे.

आदर्श हिंदी शाखा – साबरमती का राजभाषा विषयक निरीक्षण

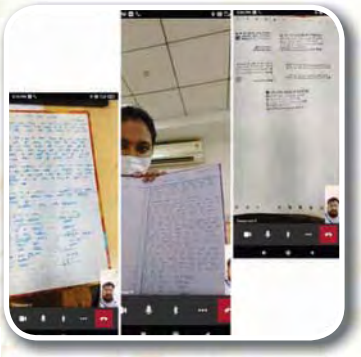

दिनांक 26 मई, 2021 को अहमदाबाद क्षेत्र 1 की आदर्श हिंदी शाखा – साबरमती का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. यह निरीक्षण माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से किया गया.

आदर्श हिंदी शाखा भीलोड़ा का राजभाषा विषयक ई-निरीक्षण

साबरकांठा क्षेत्र की आदर्श हिंदी शाखा ''भीलोड़ा'' का 11 जून, 2021 को राजभाषा विषयक ई-निरीक्षण किया गया. यह निरीक्षण माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से किया गया.

विविध आयोजन

नागपुर क्षेत्र द्वारा राजभाषा विषयक ई-निरीक्षण

दिनांक 28 जून, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के राजभाषा प्रभारी द्वारा नागपुर क्षेत्र की तीन शाखाओं (नवेगांव बांध, सडक अर्जुनी एवं गड़चिरोली) का राजभाषा विषयक ई-निरीक्षण किया गया. ई-निरीक्षण के दौरान शाखाओं में उपलब्ध धारा 3(3) के दस्तावेज, द्विभाषी स्टैम्प, रजिस्टर, साइन बोर्ड आदि का निरीक्षण किया गया.

करनाल क्षेत्र में ग्राहक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

करनाल क्षेत्र की तरावी शाखा (मॉडल हिंदी शाखा) द्वारा दिनांक 25 जून, 2021 को शाखा में ग्राहक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में वित्तीय वर्ष 2020-2021 में व्यवसाय वृद्धि करने वाले ग्राहकों को उपहार भेंट कर शाखा प्रबंधक श्री हरीश बत्रा द्वारा सम्मानित किया गया.

अंचल के राजभाषा अधिकारियों की आंतरिक बैठक का आयोजन

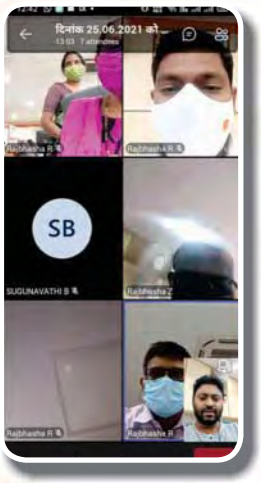

हैदराबाद अंचल कार्यालय द्वारा दिनांक 25 जून, 2021 को क्षेत्रों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों की आंतरिक बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक में वर्ष 2021-22 की कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की गई इसके अलावा क्षेत्रों के कार्यों की भी समीक्षा की गई. एवं आगामी तिमाही के लिए आयोजित की जाने वाली गतिविधियों पर भी चर्चा की गई.

अहमदाबाद क्षेत्र-1 की तिमाही ई -पत्रिका 'अहमदाबाद दर्पण' का विमोचन

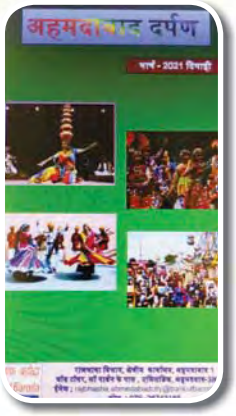

अहमदाबाद क्षेत्र-1 की तिमाही ई-पत्रिका अहमदाबाद दर्पण के जनवरी - मार्च, 2021 अंक का विमोचन दिनांक 06 मई, 2021 को श्री गंगासिंह, उप महाप्रबन्धक व क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा किया गया.

अंचलाधीन सभी राजभाषा प्रभारियों की बैठक

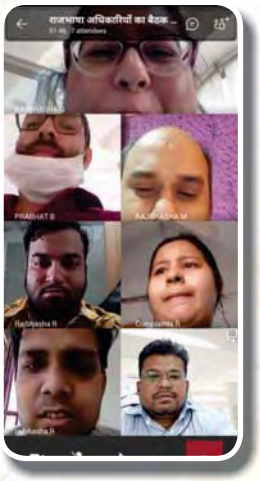

दिनांक 27 अप्रैल, 2021 को अहमदाबाद अंचलाधीन सभी राजभाषा प्रभारियों की बैठक आयोजित की गई. उक्त बैठक में वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु अंचल में राजभाषा कार्यान्वयन की रणनीति व कार्ययोजना पर विस्तृत चर्चा की गई.

लुधियाना क्षेत्र द्वारा ग्राहक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

लुधियाना क्षेत्र की फिरोजपुर रोड, लुधियाना शाखा द्वारा दिनांक 23 जून, 2021 को ग्राहक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया. शाखा प्रमुख श्री दमनदीप सिंह ने ग्राहकों को बैंक के विभिन्न उत्पादों की जानकारी दी. इस अवसर पर ग्राहकों के साथ-साथ शाखा के सभी स्टाफ-सदस्य भी उपस्थित थे.

अपने ज्ञान को परखिए

1. हाल ही में, किसे एमेज़ोन (Amazon) के नए सीईओ (CEO) के रूप में नियुक्त किया गया है?
   (क) एंडी जेसी (ख) टीफोर्ड मोंजे
   (ग) लूसो एंड्रू (घ) किको बर्ड
2. प्रतिवर्ष 'विश्व संगीत दिवस' कब मनाया जाता है?
   (क) 20 जून को (ख) 21 जून को
   (ग) 22 जून को (घ) 23 जून को
3. हाल ही में जारी रिपोर्ट के अनुसार किसे 100 सालों में दुनिया के सबसे बड़े दानवीर के रूप में चुना गया है?
   (क) बिल गेट्स (ख) वोरेन बफे
   (ग) जमशेदजी टाटा (घ) अजीम प्रेमजी
4. किस राज्य में हाल ही में, दुनिया का पहला आनुवंशिक रूप से संशोधित रबर प्लांट लगाया गया है?
   (क) उत्तराखंड (ख) असम
   (ग) तमिलनाडू (घ) मेघालय
5. किस अफ्रीकी देश में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा हीरा मिला है?
   (क) नाइजीरिया (ख) युगांडा
   (ग) तंजानिया (घ) बोत्सवाना
6. किस खिलाड़ी ने 2021 फ्रेंच ओपन का खिताब जीता है?
   (क) रफ़ाएल नडाल (ख) नोवाक जोकोविच
   (ग) स्टेफनोस सितसिपास (घ) रॉजर फ़ेडरर
7. निम्नलिखित में से कौन सा अंग मानव शरीर के विभिन्न भागों में ऑक्सीजन को प्रवाहित करता है?
   (क) लाल रक्त कोशिकाएँ (ख) श्वेत रक्त कोशिकाएँ
   (ग) प्लाज्मा (घ) तंत्रिकाएँ
8. अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ मिलकर किस मोबाइल एप्लिकेशन को लॉन्च किया है?
   (क) e-Yoga (ख) m-Yoga
   (ग) Skill Yoga (घ) Yoga Go
9. हाल ही में, किस क्रिकेट टीम ने वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप की पहली ट्रॉफी जीती है?
   (क) इंग्लैंड (ख) भारत
   (ग) ऑस्ट्रेलिया (घ) न्यूजीलैंड
10. चैनल द्वीप समूह (Channel Islands), इंग्लिश चैनल का एक द्वीप समूह है, यह किन दो देशों के बीच स्थित है?
    (क) फ्रांस और यूके (ख) यूके और जर्मनी
    (ग) फ्रांस और स्पैन (घ) पुर्तगाल और स्पैन
11. तुअर/अरहर, उड़द और मूंग किस प्रकार की प्रमुख फसलें हैं?
    (क) रबी फसल (ख) जायद फसल
    (ग) खरीफ फसल (घ) उपर्युक्त सभी
12. पशु व्यवहार के वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ अध्ययन को कहते हैं.
    (क) कीट विज्ञान (ख) परिस्थिति विज्ञान
    (ग) आचार शास्त्र (घ) सुजीवन विज्ञान
13. फ्लिपकार्ट ने किस राज्य सरकार के साथ चिकित्सा से जुड़ी वस्तुओं को ड्रोन के जरिये पहुँचाने का समझौता किया है?
    (क) आंध्र प्रदेश (ख) तेलंगाना
    (ग) महाराष्ट्र (घ) कर्नाटक
14. कौन सा देश बिटकॉइन (Bitcoin) को कानूनी मान्यता देने वाला दुनिया का पहला देश बना है?
    (क) अल सल्वाडोर (ख) पनामा
    (ग) डोमिनिकन रिपब्लिक (घ) मेक्सिको
15. भारत का सबसे बड़ा नमक उत्पादक राज्य कौन सा है?
    (क) राजस्थान **(ख) गुजरात**
    (ग) तमिलनाडू **(घ) ओड़िशा**
16. केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) के नए निदेशक के रूप में किसे चुना गया है?
    (क) राजेश चंद्रा (ख) महेश तोमर
    (ग) सुरेश यादव (घ) सुबोध जायसवाल
17. गरमपानी वन्य अभयारण्य (Garampani Wildlife Sanctuary) भारत के किस राज्य में स्थित है?
    (क) जूनागढ़, गुजरात (ख) कोहिमा, नागालैंड
    (ग) दीफू, असम (घ) गंगटोक, सिक्किम
18. निम्नलिखित में से किस देश ने दिन में टेलीविज़न पर जंक फूड के विज्ञापन दिखाने पर रोक लगाई है?
    (क) भारत (ख) नाइजीरिया
    (ग) ब्रिटेन (घ) न्यूजीलैंड
19. इजराइल के नए प्रधानमंत्री के रूप में किसे नियुक्त किया गया है?
    (क) योसेफ अल्मोंगी (ख) रुवाह्या अवराहम
    (ग) शलोमो बेनाजिरी (घ) नफ्ताली बेनेट
20. विश्व में अम्ल वर्षा से सर्वाधिक प्रभावित देश है–
    (क) नॉर्वे (ख) जॉर्डन
    (ग) श्रीलंका (घ) ज़ाम्बिया

उत्तर के लिए पेज नं. 33 देखे.

निरंतर सीखते रहें

पिछले हफ्ते, मैं कुछ वस्तुएं खरदीने की तलाश में था लेकिन जब मैंने अपने खाते की जांच की तो मेरे खाते में उपलब्ध राशि उस वस्तु की कीमत के बराबर थी. वैसे तो मैं उक्त वस्तु कुछ हफ़्ते के बाद खरीदने की योजना बना रहा था और साथ ही मैंने अपने माता-पिता को इसके बारे में सूचित किया था. मेरे माता-पिता ने मुझसे राशि से संबंधित मदद करने की पेशकश की, परन्तु उस समय मैंने उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया. बाद में उन्होंने ही खरीददारी करते समय कुछ आपातकालीन राशि रखने का सुझाव दिया और मुझे पहले से उन्हें सूचित करने के लिए कहा. बहरहाल, रविवार को जब मैं बाजार में उक्त वस्तु की खोज कर रहा था, तभी मैंने अचानक उस वस्तु को खरीदने का फैसला किया, क्योंकि यह वस्तु बहुत ही आकर्षक कीमत पर उपलब्ध थी और अगर मैं कुछ दिन तक प्रतीक्षा करता, तो संभावना थी कि मैं निश्चित रूप से उस वस्तु को खरीदने का मौका गवां देता.

इसलिए मैंने तुरंत घर फ़ोन लगाया और अपनी माँ से पूछा कि क्या वह तत्काल मेरे खाते में कुछ पैसे ट्रांसफर कर सकती हैं? हालांकि यह अति-उत्साह में अचानक लिया गया निर्णय था लेकिन मुझे चिंता भी हो रही थी. मेरी चिंता का कारण रविवार था और मेरे मन में यह सवाल उठ रहा था कि मां बिना बैंक गए राशि कैसे ट्रांसफर कर सकती है. वह एक सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी है और बैंकिंग लेनदेन करने के लिए व चेक ट्रांसफर करने के लिए बैंक जाने की जरूरत होती है. सब कुछ इतनी तेज़ी में हुआ कि मैंने खरीददारी को अंतिम रूप देते समय अपनी मां के इस अवरोध के बारे में सोचा ही नहीं.

2 घंटे के बाद, लगभग दोपहर के 3.00 बजे मुझे एक एसएमएस मिला जिसमें 50,000/- रुपये की राशि मेरे बैंक खाते में ट्रांसफर की गयी थी. मैं चौंक गया. यह कैसे संभव है? मैंने लेनदेन के विवरण की जाँच की और पाया कि मेरी माँ ने मेरे खाते में 50,000/- रुपये का एक UPI लेनदेन किया है. विवरण देखने के बाद, मैं फिर से चौंक गया कि मेरी माँ ने यह UPI लेनदेन आख़िर किया कैसे? बड़ी उत्सुकता के साथ, तुरंत मैंने उसे फोन किया और पूछा कि आपने यह UPI कैसे किया? उसने बस जवाब दिया कि मैंने ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर करना सीख लिया है.

खैर, राशि प्राप्त करने के बाद, मैंने सभी भुगतान किए और घर वापस आ गया. मैं अभी भी हैरान, रोमांचित और खुश था. मैं घर आकर बैठ गया और सोचा कि माँ को ऑनलाइन मनी ट्रांसफर सीखने के लिए किस बात ने प्रेरित किया? मैंने काफी समय विचार किया और इसके साथ ही मैं कुछ ठोस बिंदुओं पर आया, जोकि मेरे पेशेवर जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत सफलता के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण हैं.

1. नई चीज़ों को सीखने के लिए सबसे पहली चीज़ जो मैंने सीखा वह है उत्साह. मेरी माँ, एक सरकारी कर्मचारी थीं और उनके विभाग में कंप्यूटर नहीं होने से कभी भी उन्होंने डेस्कटॉप कंप्यूटर पर काम नहीं किया. वर्तमान समय के विपरीत जहाँ हम कंप्यूटर का उपयोग करते हैं, तब उनके सभी आधिकारिक कामकाज़ हाथ से ही किए जाते थे. तो ऐसी परिस्थिति में उस उत्साह की कल्पना करें जो अभी भी नई चीजें सीखने के लिए उनके पास हैं.

2. हमेशा नई चीजों को आज़माना चाहिए. नए अनुभवों के लिए केवल उत्साहित रहना अथवा उपयोग करना, इन दोनों बातों में अंतर है. आप नई चीजों के लिए उत्साहित हो सकते हैं लेकिन क्या आप उन नई चीजों को आजमाने के लिए तैयार हैं. एक नौजवान के रूप में अगर कोई चीज मुझे उत्साहित करती है तो मुझमें कोशिश करने का साहस और विश्वास भी होना चाहिए. मैं कोशिश करते हुए असफल हो सकता हूं, लेकिन वह असफलता नई चीजों के प्रति मेरे उत्साह को कम नहीं कर सकती. असफलता सफलता का एक हिस्सा है. कोई भी असफलता को सफलता से अलग नहीं कर सकता है. सफलता केवल कई सारी असफलताओं का ही परिणाम है.

3. मेरे अनुसार तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु काम के लिए अलग-अलग तरीकों से कोशिश करते रहना है. जब मेरी माँ ने अपने मोबाइल में ऐप इंस्टॉल किया, तो उसका पहला लेनदेन बिजली के बिलों का ऑनलाइन भुगतान करने के लिए था. COVID-19 के कारण बिजली कंपनियों के कार्यालयों में बिल काउंटर बंद कर दिए गए थे. ऐसे में बिलों का भुगतान करने का एकमात्र तरीका केवल ऑनलाइन मोड था. इसलिए इस आवश्यकता के कारण उसने वह ऐप इंस्टॉल किया. पहले उसने बिजली का बिल भरने के लिए ऑनलाइन लेनदेन किया

और इसके समानांतर उसे पता चला कि हम राशि भी ट्रांसफर कर सकते हैं.

एक युवा पेशेवर के रूप में हमें रोजाना कुछ नियमित कार्यों के साथ-साथ अपने पेशेवर जीवन में कुछ कम रोचक कार्य भी करने होते हैं. यह कम रोचकता दैनिक जीवन में नई चीजों के प्रति हमारे उत्साह को ख़त्म करती है. हम कभी-कभी इस बात पर ध्यान देना भूल जाते हैं कि हमारे आसपास क्या नई चीजें चल रही हैं क्योंकि हमें अपनी परिधि से बाहर निकलने का समय नहीं मिलता है. हमने हमेशा नीरस चीजों को खत्म करना अपनी दिनचर्या में शामिल किया और नई चीजों को आजमाने से खुद को दूर कर लिया.

उपरोक्त उद्धृत अनुभव का निष्कर्ष यही है कि नई चीजों से उत्साहित होना और प्रयास करना. इस प्रयास से हम कुछ तो सीखेंगे ही, जो एक व्यक्ति के रूप में हमें और बेहतर बनाता है. अपनी माँ द्वारा पेटीएम करने के बाद मैंने जो सबसे बड़ा सबक सीखा, वह है जीवन में कभी भी सीखना बंद न करें. दैनिक दिनचर्या से थोड़ा समय निकालें, अपने आसपास देखें, हमारी बहुत सारी नई चीजें प्रतीक्षा कर रही हैं.

यह आदर्श वाक्य है, **'निरंतर सीखते रहें.'**

अमोल विपट
वरिष्ठ प्रबंधक - सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
बड़ौदा सन टॉवर, मुंबई

पुरस्कार एवं सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर में मासिक राजभाषा वैभव पुरस्कारों का वितरण

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर में दिनांक 17 मई, 2021 को मासिक राजभाषा वैभव पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन करने वाले स्टाफ सदस्यों में लेखा परीक्षण एवं निरीक्षण विभाग से अधिकारी श्री नन्दन कुमार को नेटवर्क उप महाप्रबंधक, छत्तीसगढ श्री रंजीत कुमार मंडल एवं रायपुर क्षेत्रीय प्रमुख श्री सत्तरंजन महापात्र द्वारा सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै द्वारा ''सौराष्ट्र कॉलेज'' मदुरै का सम्मान

दिनांक 09 अप्रैल, 2021 को बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै ने सौराष्ट्र कॉलेज को राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार और शिक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु ''बड़ौदा राजभाषा शिक्षण पुरस्कार'' से वर्ष 2020-21 के लिए सम्मानित किया. क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एम पी सुधाकरन ने सौराष्ट्र कॉलेज के प्राचार्य श्री एन एच सरवनन और विभागाध्यक्ष हिन्दी श्रीमती रोहिणी पंडियन को सम्मानित किया गया.

राजभाषा उत्कर्ष पुरस्कार योजना

अंचल कार्यालय, बड़ौदा में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा उत्कर्ष पुरस्कार योजना नाम से मासिक रोलिंग ट्रॉफी का आयोजन किया जाता है. जून 2021 तिमाही में बेहतर कार्य करने वाले विभागों को संबंधित माह में अंचल प्रमुख एवं उप अंचल प्रमुख द्वारा रोलिंग ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया.

शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु ग्राहक सम्मान

दिनांक 24 जून, 2021 को शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु भरूच क्षेत्र की चयनित मॉडल हिंदी शाखा सेंटर पॉइंट के शाखा प्रमुख श्री रोहित वैश्य, मुख्य प्रबंधक द्वारा जून 2021 तिमाही के अंतर्गत शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु महत्वपूर्ण ग्राहक श्रीमती जागृतिबेन बूच को सम्मानित किया गया.

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Bank float – बैंक–फ्लोट

बैंक में चेक जमा करने की तिथि से लेकर आहर्ता के खाते में नामे लिखने की तिथि के बीच का समय. इसे बैंक कलेक्शन फ्लोट, चेक समाशोधन अथवा ट्रांजिट फ्लोट भी कहते हैं. इसका अर्थ फ्लोट (अस्थिर) से भिन्न है.

Cyclical stock - आवर्ती शेयर

ऐसे शेयर, जो अर्थव्यवस्था की गति के अनुरूप चलते हैं अर्थात् जब अर्थव्यवस्था में तेजी का दौर होता है तो इनमें भी उछाल देखा जा सकता है और अर्थव्यवस्था जब मंदी की चपेट में होती है तो ऐसे शेयर भी लुढ़कने लगते है.

Financial supermarket – वित्तीय सुपरबाजार

ऐसी वित्तीय कंपनी, जो एक ही छत के नीचे कई प्रकार की वित्तीय सेवाएं प्रदान करती है. इन सेवाओं में बैंकिंग से लेकर शेयरों में निवेश और बीमा सुविधा तक का समावेश है. यहां आने पर ग्राहक को एक ही जगह सभी प्रकार की वित्तीय सेवाएं सहज रूप में उपलब्ध हो जाती हैं, जो केवाईसी मानकों के लिहाज से एक अच्छा उदाहरण है.

Market overhang - बाजार गतिरोध

एक सिद्धांत, जो यह मानता है कि कुछ परिस्थितियों में संस्थान अपने शेयर बेचना तो चाहते हैं लेकिन बाजार की तत्कालीन परिस्थितियों के मद्देनजर ऐसा करने से बचते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उस समय उनके शेयरों के दाम गिर सकते हैं. उनकी यह सोच इस अवधारणा पर आधारित होती है कि शेयरों के दाम में गिरावट का परिणाम होगा प्रतिभूतियों की बिक्री, जिसके परिणामस्वरूप शेयरों के दाम में अपेक्षित बढ़ोतरी प्रभावित हो सकती है.

Notice deposits – सूचना पर प्रतिदेय जमाराशि

जमाकर्ताओं द्वारा दी जाने वाली निर्दिष्ट सूचना–अवधि (जैसे 24 घंटे, 7 दिन आदि) के भीतर देय अल्पावधि ब्याजमुक्त जमाराशि. दीर्घावधि सूचना की अपेक्षा करने वाली जमाराशियों पर अल्प सूचना वाली जमाराशियों की तुलना में उच्चतर ब्याज–दर मिलती है.

Private placement - निजी आबंटन

किसी बॉन्ड या प्रतिभूति को सीधे ही कुछ चुनिंदा निवेशकों को बेच देना ही निजी आबंटन है. जैसे बाजार में अकसर जीवन बीमा निगम जैसे संस्थागत निवेशकों को शेयरों का आबंटन सीधे तौर पर कर दिया जाता है, ताकि शेयरों की बिक्री के पंजीकरण जैसे औपचारिक कदमों से बचा जा सके. इस तरह के संस्थागत निवेशक शेयरों में धन निवेश के उद्देश्य से लगाते हैं, न कि उनकी बाजार में पुनर्बिक्री करने के लिए.

Relationship pricing - संबंधपरक दर–निर्धारण

अब तक बैंक सभी के लिए एकसमान शुल्क–नीति अपनाते रहे हैं. लेकिन बढ़ती प्रतिस्पर्धा और ग्राहक–जागरूकता ने बैंकों को ग्राहकों में विभेद कर अपने उत्पाद बेचने, ऋण–सुविधाएं उपलब्ध कराने और सेवागत शुल्क लगाने की नीति अपनाने के लिए बाध्य कर दिया है. बैंक अब ग्राहक–विशेष की रेटिंग अथवा उसके साथ गतकाल में रहे अनुभवों के आधार पर उन्हें ऋण–दर में छूट अथवा सेवाशुल्क में कटौती प्रदान कर ऐसे ग्राहकों को अपने साथ जोड़े रखने का प्रयास करते हैं. बैंकिंग के इस स्वरूप को संबंधपरक बैंकिंग के नाम से जाना जाता है और इसमें दर अथवा शुल्क–निर्धारण के मूल में ग्राहक के साथ संबंधों पर विशेष ध्यान दिया जाता है.

Servuction - सेवा–उपभोग

मार्केटिंग की एक ऐसी संकल्पना, जो उस अवस्था की परिचायक है जब उत्पादन और उपभोग एक–साथ हो अर्थात् उत्पादक या सेवा प्रदान करनेवाला एवं ग्राहक एक–दूसरे से सीधे ही इंटरेक्ट करें. यह संकल्पना विशेष रूप से बैंकिंग–सेवाओं के संदर्भ में सामने आती है, जहां सेवा प्रदान करनेवाला अर्थात् बैंक एवं ग्राहक सेवा प्रदान करने के समय आमने–सामने होते हैं और एक ही समय पर उत्पादन एवं उपभोग दोनों घटित होते हैं.

Turn key project – तैयार परियोजना/ संपूर्ण परियोजना

किसी परियोजना की रूपरेखा तैयार करने से लेकर उसे पूरा करने तथा उसमें निर्माण–कार्य शुरू होने तक का काम हाथ में लेने को तैयार/ संपूर्ण परियोजना कहा जाता है. इसमें परियोजना तैयार करने की संविदा इस प्रकार की होती है कि परियोजना को एकदम तैयार हालत में उसके मालिकों/ प्रवर्तकों को सौंपा जाएगा.

Wire transfers - वायर–अंतरण

इलेक्ट्रॉनिक निधि–अंतरण की दो बड़ी पद्धतियों में से एक. केवल अदाकर्ता धनप्रेषण की पहल करता है. वायर–अंतरण का सूचना–प्रारूप पूरी तरह लचीला है, परंतु यह लचीलापन बैंक की श्रम–लागत उल्लेखनीय रूप से बढ़ा देता है और परिणामत: फीस (शुल्क) बहुत बढ़ जाती है.

हमारे जीवन में पुस्तकों का महत्व

राधिका ''अंदर आ जाओ बेटा.''

मैं कौतूहल भरी दृष्टि से अंदर प्रवेश करती हूँ और दादाजी से पूछती हूँ – ''यह क्या है बाबा ?'', दादाजी बताते हैं यह पुस्तकालय है. यहाँ हर प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध होती हैं. दादाजी की बातें सुन मेरे चेहरे पर मुस्कान छा गयी और मैं उनसे पूछने लगी 'क्या यहाँ चम्पक और नन्दन पढ़ने को मिलेंगे ?' तो पुस्तकालय अध्यक्ष महोदय बताने लगे – 'हाँ बच्चे, यहाँ बच्चों के पढ़ने के लिए बहुत सी किताबें मौजूद हैं और थोड़ी देर में ही वे कुछ किताबें देते हुए मुझे कहने लगे कि पुस्तकालय के नियमानुसार यह पुस्तकें तुम्हें चौदह दिनों में वापिस करनी होगी. अपनी मन पसंद किताबों को पा कर मैं खुशी से चहकने लगी और नियमानुसार मैंने चौदह दिनों में किताबें वापिस कर दी. मुझे बचपन से ही किताबें पढ़ने का बहुत शौक है. किताबें मित्र के समान ही होती हैं जिस प्रकार हमारे आस-पास के लोग हमें प्रभावित करते हैं उसी प्रकार किताबें भी हमारी सोच को प्रभावित करती हैं. इसलिए सही किताबों का चयन करना बेहद जरूरी हैं. किताबें पढ़ने में मेरी रुचि इतनी थी कि मैं हर शुक्रवार पुस्तकालय जाने लगी और इस प्रकार मेरा किताबों के प्रति प्रेम विकसित हुआ. मैं किताबों को अपना दोस्त समझने लगी. बचपन में विष्णु शर्मा जी की पंचतंत्र की कहानियाँ पढ़ने में बहुत मज़ा आता था. पंचतंत्र की कहानियों में मनुष्य पात्रों के अलावा कई बार पशु पक्षियों को भी कथा का पात्र बनाया जाता है. मुझे पंचतंत्र की कहानियों से कई सीख मिली, जैसे कि अच्छे आचरण का क्या महत्व होता है, ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं जाता, दया एवं परोपकार से ही मनुष्य का जीवन सार्थक होता है आदि. यदि बच्चों को ज्ञानवर्धक कहानियाँ सुनाई जाये तो उनके आचरण पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता हैं. इसलिए पहले के समय में दादाजी और दादी माँ बच्चों को कहानियाँ सुनाया करते थे.

पुस्तकें अच्छे मित्र के समान सदैव ही हमारा मार्गदर्शन करती हैं. जिस प्रकार अच्छे विचार वाले मनुष्यों के साथ रहकर हमारे विचार भी उच्च होते हैं और हम उन्नति करते हैं उसी प्रकार अच्छी पुस्तकें हमें ज्ञान की रोशनी प्रदान कर हमारे जीवन से अज्ञान रूपी तिमिर को दूर करती हैं. यह हमें सच्चे मित्र की भांति कभी अकेला महसूस नहीं होने देती हैं. ज़िंदगी के धूप-छाँव में कई लोग मिलते-बिछड़ते हैं किन्तु किताबें सच्ची दोस्त की तरह हमेशा हमारा साथ निभाती हैं.

मेरा संयुक्त परिवार था. मेरे दादाजी हम सभी भाई-बहनों को रोज कहानियाँ सुनाया करते थे. उनकी छोटी-छोटी कहानियाँ बहुत अच्छा संदेश देती थी और उन बातों का हमारे ऊपर बहुत अच्छा असर होता था. कहानियों के माध्यम से उन्होंने हमारे अंदर अच्छे आचरण का जो बीज बोया, उसके तरुवर की छाँव हमेशा हमारे जीवन को शीतलता प्रदान करेगी. आज के समय में नौकरी करने के लिए हमें अपने घर से दूर परदेश में रहना पड़ता हैं किन्तु अपने बड़ों के शब्द एवं सीख हमेशा हमें उनके होने का एहसास दिलाते हैं और हर कठिन परिस्थिति में हमारा मार्गदर्शन करते हैं. मेरे बाबा को लिखने का बहुत शौक है. वे हमेशा अपने खाली समय में कुछ न कुछ लिखा करते हैं. मेरे गांव में रामधारी सिंह दिनकर मार्ग है जहाँ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी की प्रतिमा है. मैं जब भी वहाँ से गुजरती थी तो अपने बाबा से पूछती थी, ''ई के छथहीन बाबा'' (मैथिली भाषा में जो कि मेरी क्षेत्रीय भाषा है) और बाबा बताते थे कि ये हमारे गाव के महापुरुष हैं जिन्होने कई कविताएं एवं कहानियां लिखी हैं और इन्हें राष्ट्रकवि का दर्जा प्राप्त हैं. उस प्रतिमा को देखकर कर मुझे बहुत खुशी होती थी और मुझे गर्व का अनुभव होता था कि मेरा जन्म भी उसी पावन धरती पर हुआ जहाँ ऐसे महान लेखक ने जन्म लिया हो. वहीं से मुझे लिखने की भी प्रेरणा मिली. बाबा हमेशा मुझे कविताएं लिखने के लिए प्रेरित करते थे और मेरी त्रुटियों को सुधारा करते थे. वे हमेशा कहते थे, अच्छा लिखने के लिए पढ़ना बहुत जरूरी हैं, इसलिए मुझे ज्यादा से ज्यादा पढ़ना चाहिए.

इस दुनिया के बहुत से महापुरुषों का पुस्तकों से विशेष लगाव रहा है. पंडित नेहरू के बारे में कहा जाता हैं कि उन्हें पुस्तक पढ़ने का इतना शौक था कि कभी-कभी पुस्तक-पढ़ते-पढ़ते पूरी रात गुज़र जाती थी. यह भी सत्य है कि हम जितना अधिक पढ़ते हैं उतना ही अच्छा लिख पाते हैं. नेहरुजीने कई पुस्तकों की रचना की जैसे कि भारत की खोज, विश्व इतिहास

की झलक, हिंदुस्तान की समस्याएँ आदि. स्वामी विवेकानंद के बारे में कहा जाता है कि वे जो भी किताब पढ़ते थे, वह उन्हें कंठस्थ हो जाती थी. उनके जीवन का एक वाकया था कि एक बार वे रेल में सफर कर रहे थे और उनके सामने वाली सीट पर जो यात्री सफर कर रहा था उसके पास एक किताब थी जोकि स्वामीजी पढ़ना चाहते थे. उस यात्री ने स्वामीजी को किताब पढ़ने के लिए दे दी किन्तु स्वामीजी वह किताब लौटाना नहीं चाहते थे इस कारण उन्होंने किताब देने से मना कर दिया. यात्री मामले को न्यायाधिकरण के समक्ष ले गया. वहाँ स्वामी विवेकानंद से कहा गया कि वे साबित करें कि वह पुस्तक उनकी है. उन्होंने सब को अचंभित कर दिया. उन्हें याद था कि किस पृष्ठ पर क्या लिखा हुआ है. उनसे प्रभावित होकर यात्री ने वह पुस्तक स्वामी विवेकानंद को दे दी.

गीता में कहा गया है – ''ज्ञानात् ऋते न मुक्ति'' अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है. इसलिए ज्ञान का अर्जन जरूरी है और ज्ञान पाने के दो मार्ग हैं – एक सत्संगति और दूसरा स्वाध्याय. आज के दौर में सत्संगति सरलता से उपलब्ध नहीं है किन्तु पुस्तकें बहुत ही सरलता से मिल जाती हैं जिसके द्वारा स्वाध्याय संभव है. आज हर भाषा में किताबें मौजूद हैं, अपनी क्षमता अनुसार अध्ययन कर हम अपने ज्ञान के क्षितिज का विस्तार कर सकते हैं. पहले के युग में किताबों का प्रकाशन संभव नहीं था तो वाणी ही ज्ञान का माध्यम हुआ करती थी. शिष्य गुरु के साथ रह कर उनके प्रवचनों द्वारा विद्या प्राप्त किया करते थे. फिर थोड़ा विकास हुआ और लोगो ने पत्तों पर लिखना शुरू किया और इसी तरह विकास करते–करते पुस्तकों का प्रकाशन संभव हो पाया.

मैं पहली बार जब नौकरी के लिए अपने घर से दूर गयी तो मेरी ज़िंदगी में बहुत ही सूनापन आ गया था. सब कुछ नया था, मैं सब से अंजान थी, हर पल घर वालों की याद आया करती थी और मन एक पंछी की तरह घर के गलियों में ही विचरण करता रहता था. जहां मैं काम करती थी वह क्षेत्र भी बिलकुल अलग था, इसलिए वहाँ मेरा कोई दोस्त भी नहीं था. फिर मैंने किताबों का ही सहारा लिया. मैंने उस दौरान विभिन्न किताबें पढ़ी जैसा कि जय शंकर प्रसाद की कामायनी, मुंशी प्रेमचन्द्र का मंगलसूत्र. मंगलसूत्र में मुंशीजी ने एक साहित्यकार के जीवन की मुश्किलों का वर्णन किया है जोकि बहुत ही मार्मिक है. पुस्तक हमारे मनोरंजन के लिए सबसे अच्छा साधन है. आज के इस आधुनिक युग में बहुत से ऐसे लोग हैं जो घर से बाहर रहते हैं या अपने परिवार से दूर रहते हैं. ऐसे लोगों के लिए पुस्तक मनोरंजन के साधन हैं जो उनके नीरस ज़िंदगी में रस भर देती हैं. यह न सिर्फ मनोरंजन करती हैं बल्कि ज्ञान भी देती हैं. ज्ञानी व्यक्ति सदा ही पूजनीय होता हैं. उसके ज्ञान के कारण उसकी हर जगह प्रशंसा होती है जिससे उसका मनोबल बढ़ता है और सकारात्मक विचार आते हैं. अब तक तो मैं कई किताबें पढ़ चूकी हूँ और अब यदि किसी सफर में किताबें साथ न हों, तो लगता है मानो कुछ छूट गया हो. किताबें पढ़ना अब मेरी रोजाना की दिनचर्या में शामिल है. इससे मुझे बहुत शांति और खुशी मिलती है.

सच ही कहा गया है ''ज्ञान मित्र है और अज्ञानता शत्रु.'' जिसमें ज्ञान का अभाव होता है वह स्वयं को हीन समझता है और उसमें कई दोष और विकार आ जाते हैं. कुछ लोग ऐसे होते हैं जो शिक्षा प्राप्त कर आगे बढ़ना चाहते हैं किन्तु पैसे के अभाव के कारण वे कुछ खास नहीं कर पाते हैं. लेकिन पुस्तकें उनके लिए एक वरदान जैसी हैं. वे बहुत ही कम कीमत पर पुस्तकें खरीद कर या किसी से मांग कर पढ़ सकते हैं.

जीवन की वास्तविकता का अनुभव करने के लिए हमें किताबें पढ़नी चाहिए. किताबों के हृदय में ही हमारे पूर्व ज्ञान–विज्ञान, दर्शन, इतिहास और साहित्य सुरक्षित हैं और आज लाखों वर्ष के बाद भी हम उनके अधिकारी हैं. इन्हीं के माध्यम से हमारे पूर्वजों ने अपने ज्ञान–धन वसीयत हमारे नाम की है। गौतम, कपिल, वाल्मीकि आदि को कई वर्ष हो गए किन्तु पुस्तकों के माध्यम से उनका ज्ञान आज भी सजीव है. श्रीराम और श्रीकृष्ण हैं तो नहीं, परंतु किताबों के द्वारा उनकी वीरता, शक्ति, शौर्य आज भी नवीन लगते हैं. आज के समय में स्कूल के पाठ्यक्रम में रामायण और महाभारत शामिल है ताकि आज की पीढ़ी के बच्चे भी हमारे आदि ग्रंथो के बारे में जान सकें और उनका सम्मान कर सकें.

अतः जीवन को जीवंत बनाए रखने के लिए पुस्तकों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है. जब कभी भी सूना–सूना लगे तो कोई किताब उठाइये और पढ़ना शुरू कर दीजिये.

स्तुति शांडिल्य
अधिकारी, वल्लभ विद्यानगर शाखा
आणंद क्षेत्र

चित्र बोलता है ।

1

स्कूल खुले हैं, स्कूल है जाना
बारिश से भला क्यूँ हैं घबराना
जब साथी अपना छाता पुराना
पर यह बात तुम भूल न जाना,
मास्क पहनना, खुद को बचाना

तानिया मित्तल
प्रबन्धक
सरकारी संपर्क एवं पी.एस.यू. व्यवसाय विभाग
नई दिल्ली

2

इंतज़ार में खड़ा भविष्य
अब चलेंगे प्रगति की राह पर
बेचैन हैं थमे कदम
चलने के लिए.....
आओ साथ दें उन्हें प्रगति की राह पर

संजय पवार
प्रबंधक (का.प्र.)
क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

3

बरसात की मार,
करोना का कहर,
विद्या पाने की चाहत
हम में है गहन..

युक्ता चौधरी
वरिष्ठ प्रबन्धक
सरकारी संपर्क एवं पी.एस.यू.व्यवसाय विभाग
नई दिल्ली

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 का गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अप्रैल–जून, 2021 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रयाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/–) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई–मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 31 अगस्त 2021 तक भेज सकते हैं.

मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत 10 जून, 2021 को अहमदाबाद क्षेत्र–1 द्वारा गुजरात विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वर्ष 2020–21 के एम. ए. (हिन्दी) में प्रथम स्थान प्राप्त श्री निरंजन उदयप्रताप शर्मा एवं द्वितीय स्थान प्राप्त सुश्री रूपालीबेन शर्मा को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया. उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एम.एम. बंसल, महाप्रबंधक, अहमदाबाद अंचल ने की.

क्षेत्रीय कार्यालय, कालिकट

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना कार्यक्रम 2020 के अंतर्गत कालिकट क्षेत्र द्वारा कालिकट विद्यापीठ से एम.ए. (हिन्दी) के अंतिम वर्ष की परीक्षा में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले दो विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार व सम्मान पत्र प्रदान किया गया.

बादल राग

झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर.
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!

झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरू, तरू-मर्मर, सागर में,
सरित-तड़ित-गति-चकित पवन में,
मन में, विजन-गहन-कानन में,
आनन-आनन में, रव घोर-कठोर-
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!

अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू बरस-बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको,
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन-भैरव-संसार!

उथल-पुथल कर हृदय-
मचा हलचल-
चल रे चल-
मेरे पागल बादल!

धँसता दलदल
हँसता है नद खल्-खल्
बहता, कहता कुलकुल कलकल कलकल।

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'